पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

साप्ताहिक

समय माया

पंजीयन क्रमांक RNI-MP\HIN\2006/20685

प्रधान संपादक-अजमेरा एस.पी.कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

cell : 9300755803-9425125569
Phone Fax : 91-731-2530859
Websites : www.samaymaya.com
www.geocities.com/samaymaya/march09.pdf
www.geocities.com/corruption2india/corruptindia.html
www.geocities.com/corruption2india/corruptMP.html
E-mail : mwc@indiatimes.com
: linkdage@hotmail.com,
: linkadage@indiatimes.com

(c) all copyrights reserved with chief editor,do not publish any matter without prior permission.

वर्ष 4 अंक 10 | इंदौर, सोमवार 9 नवंबर से 15 नवंबर 2009 | पृष्ठ 8 मूल्य रु. 2/-

2 'राष्ट्र का मिलावटी और नकली चरित्र'.

3 नाच रही भू-माफियाओं की धुन पर

4 मु.अ.कां. को बंद करने का सुलेमानी षड्यंत्र

5 अपने ही चिराग कर रहे आशियां खाक

6 रुपए १० लाख के बिस्कुट भ्रष्टाचार में हजम

7 प्रशासन लेनदेन कर सो रहा, माफिया ले रहे मजे

अमेरिकी निगाहें भारतीय बैंकों को अमेरिकी बैंकों की तरह डुबोने

विश्व बैंक अ. डॉलर 10000 करोड़ भारतीय बैंकों को देगा कर्ज

पहले कर्ज देगा, फिर ज्यादा ब्याज मांगेगा, भारतीय बैंक जमा से पीड़ित

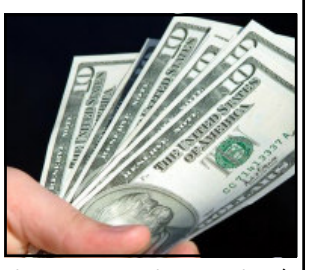

अमेरिका विश्व पर अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए विश्व बैंक को भारतीय मारवाड़ी बनियों की राह चलकर पहले कर्ज पिलाएगा। फिर अर्थव्यवस्था पर भार डालकर चौपट करेगा फिर कब्जा जमाएगा जैसा कि हमारे देश में मारवाड़ी बनिये सहस्त्रों वर्षों से करते चले आ रहे हैं।

अमेरिका ने विश्वबैंक की स्थापना इसलिए ही की थी कि पहले छोटे देशों को उनके विकास के बहाने कागजी टुकड़ों का कर्ज दो, फिर मोटा ब्याज वसूले, साथ ही विकास के बहाने दी राशि से पहले वहां की सत्ता और सत्ता में बैठे अधिकारियों को भ्रष्टाचार का रोग लगाओ और विकास के बहाने दी गई राशि को सत्ताधीशों को खिला पिला कर धीरे ब्याज की दरें बढ़ाओ फिर कर्ज और ब्याज वसूलने के लिए जनता से मोटे कर वसूलों, बाद में इस कर्ज को उतारने के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष से सदस्य देशों के धन से विश्व बैंक का उतारा करवाओ, बाद में सदस्य देशों के साथ अमेरिका उनको अपनी शर्तें मनवाने के लिए बाध्य करे, फिर व्यापारिक शर्तों पर कर्ज के दबाव में हस्ताक्षर करवाकर उस देश के बाजार पर कब्जा जमाए

शेष पृष्ठ-2 पर

यूरोपियन एजेंट सोनिया हांकती है राष्ट्र की सत्ता को

दिल्ली और देश की सत्ता चलती है वाशिंगटन से

अमेरिकी इशारे पर गुलामों को हांकने बनाए जा रहे कानून

भारत को अंग्रेजों की गुलामी से भले ही आजादी मिले 60 वर्ष हो गए हैं। परंतु अब सत्ता वाशिंगटन से चल रही है। इटालियन माफिया की बेटी सोनिया को आक्सफोर्ड में पढ़ते समय स्व. इंदिरा गांधी के बेटे स्व. राजीव गांधी की जिंदगी में इसलिए उतारा गया था अब वह इटालियन एजेंट इस राष्ट्र की बेताज सामग्री बन इस देश को हांक रही है। विश्व बैंक से विकास के नाम पर ऋण दिलवा-दिलवा कर इस राष्ट्र की पूरी अर्थव्यवस्था को हवाले गिरवी किया जा रहा है। रिजर्व बैंक की रीतियां, नीतियां तक वाशिंगटन के इशारे पर चल रही है। अब रिजर्व बैंक भी जो इस राष्ट्र के बैंकरों का बैंक है। अमेरिका की तरह यहां भी भारतीय बैंक से डालर 20000 करोड़ का जबरदस्ती उनकी शर्तों पर ऋण लादेगा जबकि भारतीय बैंकें पहले से ही वित्तीय ऋण बांटने के लिए परेशान हो रहे हैं। जब ये कर्ज और आएगा तो स्वाभाविक है। धड़ल्ले से ऋण बांटे जाएंगे। जिसमें से 10 से 20% तक हर वर्ष डुबेंगे जिनकी पूर्ति ये बैंक जमाकर्ताओं पर अनाप-शनाप सेवा शुल्क लादकर वसूलेंगे जैसा कि पिछले दस वर्ष से भारती बैंकों में हो रहा है। जालसाजियां बढेंगी इस बीच अचानक कर्ज लौटाने का फरमान आएगा। वसूली के अभाव में बैंक दिवालिया घोषित किए जाएंगे। ये मात्र एक छोटा सा नमूना है।

ताजा सबसे खतरनाक नमूना है। वाशिंगटन की तर्ज पर देश में गुड्स एंड सर्विसेज टेक्स लादना ताकि अमेरिकी और यूरोपीय कंपनियों को पूरा लाभ दिया जा सके और भारतीय अर्थ व्यवस्था में केंद्रीय और राज्यों की वित्तीय अर्थव्यवस्था गड़बड़ाए और केंद्र व राज्य सरकारें विश्व बैंक से देश चलाने के लिए कर्ज लेकर शासन चलाए इस प्रकार विश्व बैंक पर निर्भरता बढ़े और उनकी साम्राज्य स्थापित करने पर हमारी दासता मजबूत हो।

* देश के स्कूलों और कालेजों में पढ़ रही युवा पीढी को बर्बाद करने यौन शिक्षआ और कंडोम की उपलब्धि का शिगूफा वाशिंगटन के इशारे पर यूनेस्को ने दिया। उसका असर नहीं हुआ तो देशी शूकर को अरबों डालर का धन देकर 5वीं, 8वीं और 10वीं परीक्षा प्रणाली को ही हटाकर आने वाली पीढ़ी को बर्बाद करने का षडयंत्र भी यूनेस्कों के इशारे पर वाशिंगटन का ही था, पढ़ लिखे कामगार अमेरिका और यूरोप न पहुंचे।

* भारत के परिवारवाद की व्यवस्था को बिगाड़ कर युवा होती पीढ़ी का भविष्य बर्बाद करने भारतीय महिलाओं को बाजार बनाने के लिए लोकसभा से लेकर विधानसभाओं, नगर पालिकाओं, निगमों, परिषदों, जनपदों, पंचायतों में 50% महिला आरक्षण लागू करवाने, यूरोपीय महिलाओं की तरह भारतीय महिलाओं को अय्याश आवारा, बाजारू बनाने में भी वाशिंगटन के इशारे पर विश्व स्वा. संगठन मानवाधिकार महिला आयोग और सर्वोच्च न्यायालय उच्च न्यायालय को भी अप्रत्यक्ष रूप से धन बांटकर उस पर मुहर लगाई गई, ताकि आने वाली पीढ़ी संस्कारहीन होकर बर्बाद हो सके और यूरोप में बढ़ती भारतीय कामगारों को रोका जा सके।

* स्वयं अमेरिका जैविक खाद, जैविक कीटनाशकों से उपजाई गई कृषि सामग्री ही खरीदता है, स्वयं जी.एम. और बीटीबीजों का प्रयोग नहीं करता, परंतु मूल कृषि बीजों और फसलों को बर्बाद करने के लिए वाशिंगटन के इशारे पर दिल्ली का कृषि मंत्रालय रासायनिक खाद कीटनाशक और जी.एम. बीटी बीजों को मुफ्त में बांट कर ऐसे सीमांत किसानों में मोसेंटों के इशारों पर राष्ट्र की कृषि फसलों को भूमि की उर्वरा शक्ति को बर्बाद कर लाखों किसानों को आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर दिया। **शेष पृष्ठ 2 पर**

यहां सब बिकता है दुनिया में खरीददार चाहिए

विश्व के गुण्डे आतंकवादी को शांति का नोबल

बकवास है नोबल पुरस्कार,आतंकी को नोबल ने सिद्ध किया

पूरी दुनिया में नोबल पुरस्कार की बहुत ऊंची छवि थी। दुनिया के सबसे बड़े गुंडे आतंकवादी, साम्राज्यवादी नीतियों के पोषक दुनिया में सबसे बड़े हथियार विक्रेता अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा को दिया जाना सिद्ध करता है कि दुनिया में हर वस्तु बिकाऊ है बस खरीददार चाहिए।

स्वीडन की नोबल पुरस्कार समिति में बैठे दिग्गजों की मानसिकता का अंदाजा इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि वो युद्धों को अंजाम दे ताकि स्वीटरलैण्ड के हथियार भी पूरी दुनिया में बिके, सारा दुनिया के सत्ताधीशों का काला धन इस आशंका या युद्ध होने की स्थिति में स्वीजरलैंड की बैंकों में आए वो एक तरफ उसको रखने का सूद वसूले दूसरी तरफ उस पैसे को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि को देकर न केवल ब्याज कमाए वरन गरीब देशों भारत, चीन जैसे आर्थिक रूप से सुदृढ़ राष्ट्रों को भी कर्ज देकर उन्हें भी गुलाम बनाने का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रयास करने में जुटे हैं। स्वाभाविक है स्वीटजरलैंड के आर्थिक हितों को ध्यान में रखकर संकर प्रजाति के अमेरिका के राष्ट्रपति जिसने हाल ही में पद संभाला है विश्व का सर्वश्रेष्ठ आतंकवादी, साम्राज्यवादी नीतियों के पोषक राष्ट्रपति ओबामा का भूत, वर्तमान को ध्यान में रखकर भविष्य में अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए दिया गया, बिलकुल वैसे ही जैसे कि हमारे देश में बड़ी-बड़ी व्यापारिक संस्थाएं गुंडे, बदमाश नेताओं को अपनाहित साधने के लिए नेताओं, माफियाओं का सम्मान करते हैं। वैसे ही स्वीटजरलैंड की नोबल पुरस्कार समिति ने किया है उनकी बला से दुनिया क्या कहेगी, कहेगी तो कहती रहे पहले वो अपना पेट भरे बाद में किसी की सुनेंगे। इसलिए उन्होंने दो माह बाद ही ओबामा को शांति पुरस्कार के लिए चुन लिया था ताकि वो स्वीटजरलैंड की अर्थव्यवस्था का ख्याल रखते हुए पूरे विश्व में अशांति फैला कर उनके हथियार बिकवाता रहे।

शेष पृष्ठ 2 पर

सुनामी की आड़ में परमाणु बमों का परीक्षण

आखिर १९६० से पूर्व क्यों नहीं आती थी सुनामी

भारी विस्फोट से ही 300 कि.मी. से ज्यादा गति की लहरें, भूकंप, बाढ़, पानी में ललिमा

भारतीय महासागर में बसे सैकड़ों द्वीपों पर कब्जा करने और उन पर अपनी सैनिक छावनी बनाने के लिए अमेरिका द्वारा रचे गए षड्यंत्रों जिसके अंतर्गत समुद्र के अंदर पानी में परमाणु और नाभिकीय बमों को फोड़कर द्वीपों में भयानक भूकंप और विस्पोट के अंतर्गत पानी के विस्थापन से बाढ़ लाई जाती है। फिर सहायता के बहाने अपने सैनिकों को वहां उतार कर राहत कार्यों की नौटंकी की जाती है, ताकि इन भेड़ियों के झुंड को वहां के लोगों की सहानुभूति मले और वहां की औरतों, वहां के व्यापार और वहां की शासन व्यवस्था में ये घुल मिलकर अपने लिए जगह बना कर पैर जमाएं और बाद में सैनिक अड्डों में बदल कर स्थाई हो जाए। इसके परिणाम इस भारतीय महासागर में स्थायी होकर अमेरिका अपनी मिसाइलों की मारक क्षमता भारत, रूस और चीन जैसे बड़े राष्ट्रों को आने वाले भविष्य में धमका कर अपना साम्राज्य स्थापित कर सके। ये संकर प्रजाति के अमेरिकी राक्षस इस प्रकार एक तरफ तबाही की दहशत देते हैं तो दूसरी तरफ तबाही और घोर बर्बादी के बाद दुनिया में अपने आप को महान बताने के दयालु दाता होने की नौटंकी करते हैं। इस प्रकार ये विश्व का डकैत, गुंडा, राक्षस अपने आप का विश्व का नीति नियंता बनना चाहता है। दूसरी ओर अमेरिका के द्वारा निर्मित बमों की कार्यशीलता पर समय समाप्त होने के पहले उन बमों का सदुपयोग कर लेता है। **शेष पृष्ठ 2 पर**

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं
साप्ताहिक समय माया
इंदौर, सोमवार 9 नवंबर से 15 नवंबर 2009

सम्पादकीय

'राष्ट्र का मिलावटी और नकली चरित्र'

भारत विश्व को सभ्यता सिखाने वाला प्राचीनतम राष्ट्र है, जिसने पूरे विश्व को ज्ञान, विज्ञान, योग, अध्यात्म सिखाया, वर्तमान में इस राष्ट्र के चरित्र में हर कदम-कदम दोहरापन और मिलावट स्वयं राष्ट्रवासियों और विश्व के सामने स्पष्ट हो चुकी है।

राष्ट्र के सत्ताधीशों, नेताओं से लेकर आम जनता का भी इस दोहरेपन के चरित्र से लबालब छलकने लगा है। सत्ता प्राचीन काल से ही चाटुकारों, भ्रष्टों, जालसाजों, षड्यंत्रकारियों की सत्ता का ही केंद्र रही है। पर आम जनता का चरित्र साधारणतः इतना चरित्र हनन नहीं हुआ था कि जितना वर्तमान में देखने में आ रहा है। अब दूध में पानी तो पुराने की जमाने की बात है अब तो पूरा दूध ही सफेद डिटर्जेंट, खाद से बनने लगा है। वैसे ही जैसा कि हमारे राष्ट्र की जनता के चरित्र में आ ही रहा है। सत्ताधीश शीर्ष से लेकर अंतिम बिन्दु तक सब ही जनता को नोंचने-खसोटने और वसूली की मानसिकता लेकर ही जन्म लेते हैं और सत्ता में बने रहने तक अपने चरित्रगत दोहरेपन से ही क्रियाशील होते व रहते हैं।

सत्ताधीश जो कहते वो करते नहीं जो करते वो कहते नहीं ये उनके चरित्र का दोष नहीं ये सत्ता के अनिवार्य अंग हैं। जो मानव सभ्यता के साथ ही सत्ता संचालन में अनुवांशिक के साथ शताब्दियों से पीढ़ी दर अंतरिक होते हुए वर्तमान और भविष्य की निरंतर यात्रा मानव सभ्यता के रहने तक करते रहेंगे,यह गुण भारत का ही नहीं पूरे विश्व का ही है।

निःसंदेह भारत के चरित्र में स्वार्थी मानसिकता का ही परिणाम था कि हम सहस्त्रों वर्षों से गुलामी की बेड़ियों में जकड़े केवल चलते वरन जीते चले आ रहे हैं। जबकि ये वही भारत है जहां चारो वेद लिखे गए, जहां के ज्ञान, विज्ञान, आध्यात्म, योग, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्रों से विश्व की सत्ताएं प्रकाशित होती चली आ रही हैं।

वर्तमान भारत के लोकतंत्र में जालसाजी से जीतकर सत्ताएं हथियाना, सत्ता पाने के बाद राष्ट्र की जनता को लूटने, वसूली करने के लिए नए-नए षड्यंत्रों को अंजाम देना, देश की जनता से लूटे धन को विदेशों में जमा करवाना, फिर देश बेचकर और गिरवी रखकर विकास के लिए कर्ज लेना और उसका घी पी जाना, देश की जनता के सामने आंसू बहाना, शत्रुओं के सामने दुम हिलाना, गिड़गिड़ाना, अमेरिकी गुंडे की धुन पर नाच दिखाना और राष्ट्र की जनता पर बर्बादी का कहर ढाना, ये है राष्ट्र के सत्ताधीशों, नेताओं, अधिकारियों, के चरित्र का फंसाना।

जनता के चरित्र में भी वही मिलावट और दोहरापन धन और स्वार्थों की पूर्ति के लिए आना स्वाभाविक ही है। उसे भी अपनी तत्कालिक उदरपूर्ति से लेकर परिवार की उदरपूर्ति और सिर छुपाने के लिए सुरक्षित छाया के लिए वो भी मान, ईमान, दांव पर लगाकर अपने आकाओं की तरह हर खाने की वस्तु में मिलावट तो दूर पूर्णतः नकली घी, दूध, तेल, मावा, तक बना कर जहरीले रंग व मिठास मिला कर मीठी भाषा में लपेटकर बेचने के लिए बाजार में तैयार खड़ा हो जाता है, फिर उन्ही के साथ जनता जानबूझकर जबकि वह जानती है कि दूध मुंहों को पीने के लिए दूध नहीं है तो ये दूध मिठाइयां कहां से आ सकी है फिर भी खरीदती है और परोस रही है। वैसे ही जैसे कि नेता सत्ताधीश जनता को परोस रहे हैं। विशुद्ध नकली चरित्र जो मुंह में है वो दिल में नहीं जो दिल में है वो मुंह में नहीं।

वही हाल इस देश के मीडिया का हो गया है, जिसके ऊपर जिम्मेदारी राष्ट्र के स्वर्णिम भविष्य की वह सत्ताधीश और पूंजीपतियों की रखैल बन वास्तविकता से दूर स्वयं, नाच व जनता को नचा रहा है। पूर्णतः नकली।

दिल्ली और देश की ...

पेज 1 से जारी

* वाशिंगटन एक तरफ पाकिस्तान को आतंकवादी कहता है, दूसरी तरफ पाकिस्तानी आतंकवाद को पालने भारत को परेशान करने और आंख मींच कर सहायता देता है। राष्ट्र में आतंकवादी, माओवादी, नक्सलाइट, गतिविधियां चलाने के लिए ऐसे संगठनों को अप्रत्यक्ष रूप से धन देता है। दिल्ली दरबार में बैठे सोनिया का पिट्ठू मन्नु सरदार आतंकवाद और पाकिस्तान की गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 09 पर खिलाफत न करनी पड़े झूठे बायपास आपरेशन की नौटंकी कर एम्स में भर्ती हो जाता है। बेशक वाशिंगटन के निर्देश पर ही हुआ यह खेल भी ताकि विश्व में अमेरिकी कुकृत्यों की पोल न खुले।

* भारत में वाशिंगटन के इशारे पर अब धड़ल्ले से नियमों, कानूनों में न केवल संशोधन वरन अमेरिकी आका के हितों को साधने रक्षा करने और गुलामी के स्थायित्व के लिए हमारे मुखैरे भ्रष्ट श्वानों ने कई कानून भी बनाए हैं। जैसे खाद्य सुरक्षा एवं स्तर अधि. 2006, कांट्रेक्ट फार्मिंग एक्ट, ये दोनों अधिनियम ही देश के किसानों से जमीनों को न केवल आसानी से आईटीसी, रिलायंस जैसी कंपनियां अपने चौपाल और हरियाली जैसे विशाल कृषि के विक्रय और क्रय भंडार हड़प लेंगे। दूसरी तरफ किसानों की फसलों को उनके खेतों पर ही इन कंपनियों को ओनेपोने में बेचने की व्यवस्था के साथ ही चायपान, सब्जी आदि के ठेलों के माध्यम से लगे देश के करोड़ों लोगों को बेरोजगार कर देने की पूरी कानूनी व्यवस्था हमारे दिल्ली की सत्ता में बैठे भ्रष्ट मुखेरे गिद्धों ने यूरोपियन एजेंट सोनिया की देखरेख में कानून बनाकर पूरी कर दी है।

ये सब बहुत छोटे-छोटे से कृत्य है वाशिंगटन के हमारे देश की सत्ता को हांकने के, कहानी बहुत लंबी और विस्तृत है, हम जानते हैं, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर नीचे तक बैठे सारे नेता, आई.ए.एस. सर्वोच्च न्यायालय से लेकर उच्च न्यायालयों तक के न्यायाधीशों को ये कड़वी सच्चाई भले ही हजम हो या उल्टी पर है तो सच। इन सबके हमारा दृष्य, श्रव्य राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मीडिया भी इसी वाशिंगटन की तर्ज पर नाच जनता को सच से मीलों दूर रखता है। दैनिक भास्कर तो अमेरिका की गुलामी की प्रशंसा में लग चुका है जो देश का सबसे बड़ा अखबार होने का दंभ भरता है।

आखिर १९८०...

पेज १ से जारी

ताकि उस पर लगाई गई लागत की वसूली की जा सके। आखिर करोड़ों डालर की लागत से बनाए गए बमों में भी धन विनियोजित किया गया था।

शांति का नोबल

अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा को शांति का नोबल भी इसीलिए दिया गया है कि वो इन छोटे-छोटे समुद्रीय द्वीपों में रहने वाले करोड़ों मानवों को जो इंडोनेशिया, थाईलैंड, सुमात्रा, मलाया, जकार्ता व अन्य सैकड़ों टापुओं में जीवन यापन कर रहे हैं, इन बमों के परीक्षण के माध्यम से भूकंप और बाढ़ लाकर हजारों लोगों और जीवों को चिर शांतिनिंद्रा में सुला देता है। ऐसे चिर शांति देने वाले को नोबल-शांति पुरस्कार दिया जाना चाहिए।

सुनामी जिसमें आगे जो टी जुड़ा है उसका अर्थ ही टेस्ट ऑफ साइलैंट अंडर वाटर न्यूक्लियर एंड एटामिक मसिव इंक्वारस है। यह अर्थ और इसका विस्तृत विवरण इंटरनेट की वाई की मीडिया की साइट पर जो उपलब्ध है, परंतु उन्होंने भी इस तथ्य की सुनामी के पीछे परमाणुवीय और नाभिकीय बमों के परीक्षणों के रूप में भी स्वीकारा गया है। जिसे 1988 में पहली बार ये नाम दिया गया था, उसके पहले तक दुनिया में न तो इसके ऐसे परीक्षण होते थे न ही कोई इसका इतिहास था, इसके विपरीत वाइकी पीडिया में जो लिखा है गया है इस सुनामी के संबंध में सब बकवास है।

अमेरिकी षडयंत्रों और बम को फोड़कर छोटे समुद्र में बसे द्वीपों पर कब्जा करने की नियत और कारस्तानी को देखकर ही चीन ने भी ताईवान का धमकाने दहलाने और बदला लेने के लिए ताईवान के निकट समुद्र में हाल ही में एक बम समुद्र में फोड़ था जिसके फलस्वरूप ताईवान में भी हाल ही सुनामी की बाढ़ और भूकंप दोनों ही आए थे। जिससे ताईवान में भारी तबाही मची थी।

सोवियत रूस के टूटने के बाद रूस अकेला और आर्थिक रूप से कमजोर तो अवश्य हो ही गया, जिसके परिणामस्वरूप अमेरिका विश्व में चारों तरफ तांडव मचा कर तबाही फैलाता रहता है। अब अमेरिका के सामने मात्र चीन की सिर उठाती चुनौती भर है उससे अमेरिका आर्थिक और सामरिक रूप से घबराया हुआ है, इसलिए अमेरिका ने ताईवान में फोड़े चीनी परमाणु बम के विरोध में जानबूझकर कोई आवाज नहीं उठाई। अमेरिका संकर राष्ट्रपतियों से लेकर जनता और सभी उद्योगपतियों की मानसिकता में कुत्सित प्रवृत्ति समाई हुई है। इसलिए वो जो करे सो थोड़ा है। तो दादागिरी हांकने समुद्रों में बम फोड़े, छोटे-छोटे से लेकर बड़े-बड़े राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था चौपट कर, विश्व की कृषि बर्बाद करें। विश्व के मानवों का स्वास्थ्य चौपट करें, धर्म, संस्कृति नष्ट करें, ताकि इनका सिक्का चलता रहे कोई कुछ भी नहीं बोलेगा।

पेज १ से जारी

अमेरिका द्वारा हिन्दू कुश घाटी में बम परीक्षण

भारत-चीन-रूस को धमकाया, भूकंप से

भारत में आए 22-10-09 को भूकंप जिसमें काश्मीर, पंजाब से लेकर दिल्ली तक दहल उठी। पूर्व में चीन, उत्तर में रूस और पश्चिम में पाकिस्तान तक भूकंप के झटके लगे। यही हाल अमेरिका ने 8 अक्टूबर से लेकर 2 नवम्बर 05 तक पूर्व में भी किया था। अफगानिस्तान पर अमेरिका और नाटो फौजों का सन 2002 से कब्जा है। अमेरिका ने ओसामा की आड़ में अफगानिस्तान पर कब्जा इसीलिए ही किया था कि अफगानिस्तान भौगोलिक और सामारिक दृष्टि से दक्षिण एशिया का सबसे महत्वपूर्ण खतरनाक ऐसा केंद्र है जहां बैठकर अणेरिका के तीनों बड़े शत्रुओं रूस, चीन और भारत को आसानी से चमकाने, धमकाने का कार्य किया जा सकता है। अमेरिका ने इसके परीक्षण के लिए हिन्दुकुश घाटी में 8 अक्टूबर से लेकर 2 नवम्बर 05 तक बराबर परमाणुवीय और नाभिकीय धमाके किए थे। जैसे हमारे मुख्य सम्पादक का ध्यान इस ओर गया और जब 2 नवम्बर 05 की रात्रि को अपनी भ्रष्टाचार की साइट से दुनिया को ये बताया कि ये बमों के धमाके है प्राकृतिक आपदा का कारण नहीं 2 नवम्बर से लगातार चार वर्ष तक कोई इस प्रकार की हलचल या बर्बादी नहीं हुई पर 22-10-09 को अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा जिसे शांति का नोबल मिला है, दक्षिणी एशिया के अफगानिस्तान के चारों तरफ की बेकसूर जनता को चिरस्थायी शांति देने वहां की सत्ताओं को चमकाने के लिए उस धूर्त संकर अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा ने शीत युद्ध प्रारंभ होने के साथ पुनः अपने तांडवों का कहर बरपाना शुरू कर दिया। चारों तरफ श्री अजमेरा ने 23-10-09 को अपनी साइटों पर खुलासा कर दिया है। फिर इन परमाणु और नाभिकीय बमों के धरती में 2000 से 3000 नीचे किए गए से भूकंप आना शुरू हो चुके हैं। इस बात के खुलासे से पुनः अमेरिका को अपनी साख बचाने के लिए इन्हों रोकना पड़ेगा।

विश्व बैंक अमेरिकी डॉलर...

पेज १ से जारी

और अपना कचरा उन देशों के बाजारों में जिसमें सड़े गेहूं से लेकर उनके समय बाधित हथियार, जहाज आदि तक शामिल हैं बेचे जाते हैं जैसा कि भारत में, पाकिस्तान, बांग्लादेश जैसे अनेकों देशों में अमेरिका पिछले कई वर्षों से चल रहा है। अमेरिका अपने देशों की बैंकों को डुबा कर अब उन शूकरों की निगाहें भारतीय बैंकों की दीवालिया बनाने पर लगी है, ताकि करोड़ों लोगों का धन डुबोकर उन्हें कंगाल बनाकर फुटपाथ पर लाया जा सके।

इसलिए विश्व बैंक के माध्यम से अमेरिकी 10000 करोड़ डालर का पहले कर्ज दिया जाएगा जब वो उस कर्ज को वहां के भ्रष्ट श्वान उल्टा-सीधा बांटकर निवेशित कर देंगे तो ब्याज की दरें बढ़ाकर वसूली का दबाव डाला जाएगा जब वह समय पर उपलब्ध नहीं होगा और भारतीय बैंकों और वित्त मंत्रालय के भ्रष्ट अधिकारी वहां से नगदी निकालेंगे तो स्वाभाविक इतना बड़ा भुगतान करने में आसानी से बैंकों को नगदी के अभाव में दिवालिया घोषित किया जाएगा।

भारतीय बैंकों में चाहे वो स्टेट बैंक हो अन्य 26 राष्ट्रीयकृत बैंकों के साथ आईसीआईसी, एचडीएफसी, कहने को तो सरकारी हैं, पर नगर निगमों की तरह यहां पर 95% स्टाफ भारी भ्रष्टाचार और हर कदम जालसाजियों में उलझा हुआ है जो चपरासी और लिपिकीय वर्ग से लेकर अध्यक्ष, संचालक मंडल सारे शूकरों की फौज जो जहां बैठी है अपने तरह से गुल खिला रही है भारतीय बैंकों का महा बैंक रिजर्वबैंक व उसके अधिकारी गिद्धों की भांति नोंच खसोंट कर चुपचाप टुकुर-टुकुर ताक रहे हैं। अ.डा. 10000 करोड़ अर्थात रुपए 5 लाख करोड़ का आधिक्य पाकर पूरी भारतीय बैंकिंग उद्योग बोरा जाएगा साथ ही इसका उपयोग करने के लिए सस्ती दरों पर पहले ऋण बांटेगा बाद में विश्व बैंक बीच में ही उसे वसूली करने का नोटिस देगा तो स्वाभाविक है कि आनन-फानन में वसूली तो समय पर हो नहीं पाएगी, उसके अभाव में नगदी आवक की कमी होगी और दैनंदिनी देयतायें भी मुंह बाये खड़ी रहेंगी जब उसका अंतर बढ़ेगा तो अधिकतम 8-10 महीनों में अमेरिकी बैंकों की तरह यहां भी बैंक दिवालिया होना शुरू हो जाएंगे यह स्थिति अधिकतम 3 से 5वर्ष में सामने आने लगेगी।

दूसरी ओर रुपए 5 लाख करोड़ की साख मुद्रा स्फ्रीति को बढ़ाएगी जिससे बाजार आम उपभोक्ता वस्तुएं दुगुनी से तीन गुनी बढ़ जाएंगी, जिसके परिणाम स्वरूप कर्मचारी बढ़ा हुआ वेतन मांगें, दूसरी ओर छुट्टी मजदूरी वही रहेगी तो आम आदमी भूखे मरने की कगार पर पहुंच जाएगा। इन सबके विपरीत सत्ताधीश इस धन की नोंचखसोट में जुट जाएंगे जिससे भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

अमेरिका इस देश की व्यवस्था को चौपट करने के लिए यही सब तो चाहता है ताकि वो अपनी हर शर्त मनवाए हर कचरे को इस देश में बेचकर कमाई करे साथ ही जब पूरी सरकार कर्ज में डूबी हो तो भ्रष्ट धड़ल्ले से अमेरिका के पक्ष में बिके हुए होने के कारण आंख मींच कर इस देश की हर जनता की रोटी, लंगोटी तक गिरवी करने और बेचने से नहीं चूंकेंगे। न भूत में चुके थे न वर्तमान में चूक रहे हैं न भविष्य में चूकेंगे, गेट समझौता उसी का हिस्सा था।

विश्व बैंक के कर्जे की हमारी बैंकों को न तो आवश्यकता है न ही हमारे वित्त मंत्रालय में बैठे गिद्धों को इसे स्वीकार करना चाहिए किसी भी हालात में दूसरे वर्तमान में हमारी राष्ट्रीयकृत बैंकें जमाओं की राशि से ही परेशान है वो कर्ज देने को तैयार है पर जनता लेने को तैयार नहीं, फिर भारत में साख की न तो कल कमी थी न आज है, फिर विश्व बैंक का कर्ज स्वीकारने और भविष्य को अंधकारमय बनाने की क्या और क्यों जरूरत है?

विश्व के गुण्डे...

पेज १ से जारी

जिस पाकिस्तानी आतंक से दुनिया परेशान है उसके अपदस्थ राष्ट्रपति ने खुले में स्वीकार किया जो धन अमेरिका से प्राप्त होता है उसका खुलकर आतंकवादियों को पालने, प्रशिक्षण देने, हथियार चलाने, हथियार देने और भारत के साथ पूरी दुनिया में अमेरिका के इशारे पर ही आतंक फैलाया जाता है। इससे बड़ा शातिं का हकदार दुनिया में कौन हो सकता है, जो दुनिया में अशांति फैलाकर अपने हथियारों को बेचकर शांति से बैठे देशों की शांत जनता को हथियार उठाने, उठवाने के लिए मजबूर करता है।

दूसरी ओर विश्व के लोगों को भूखा मारने के लिए अपने बीज बेचने बीटी और जीएम बीजों को पूरी दुनिया में बेचकर पूरे विश्व के सहस्त्रों लाखों वर्षों से चली आ रही बीजों की मूल प्रजाति जो उस राष्ट्र की मिट्टी और जलवायु पैदा होती चली आ रही थी को नष्ट करने का मोन्सेन्टो कारगिल जैसी कंपनियां पिछले 25-30 वर्षों से रच रही है और मूल प्रजाति को नष्ट कर उस राष्ट्र की कृषि भूमि को बर्बाद करने किसानों और जनता को भूखा मारने के षड्यंत्रों को अंजाम देकर पूरे विश्र की कृषि को नष्ट किया जा रहा है। पिछले 15वर्षों से इसके फलस्वरूप अकेले भारत मेंही लाखों किसानों ने कृषि भूमि की बर्बादी और फसलों के तीसरे चौथे साल के बाद एकदम फसलों के बिगड़ने से कर्जों में फंस जाने के बाद आत्महत्याएं की है ये हैं संकर प्रजाति के अमेरिका और उसके राष्ट्रपतियों का षडयंत्र का अत्यंत लघु अंश है।

सन 1910 से हर वर्ष में पूरे विश्व में अमेरिका ने प्रोटीन्स, विटामिन्स् से लेकर एड्स हेपेटाइटिस के ए से जेट तक के टीकों को बेचने, स्वाइन फ्लू की दवाएं आदि बैचने के लिए नई-नई बीमारियों के शिगूफे छोड़कर अपने माल बेचा जिसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे संघ बनाकर मीडिया को धन बांटकर भयाक्रांत किया और माल बेचा ये है शांति के मसीहा, ऐसे शांति के मसीहाओं को पुरस्कार मिलना ही चाहिए।

सुनामी के नाम पर खुले में परमाणु और नाभिकीय बमों के परीक्षण जो कि अधिकांश भारतीय महासागर में इंडोनेशिया, थाईलैंड, मलाया, सुमात्रा द्वीपों के आसपास किए जा रहे थे 25 से 5 अक्टूबर 09 तक ये सारे द्वीपों में सुनामी के नाम पर भूपंक और साथही भयानक लहरों से इन द्वीपों को खाली कराने का षड्यंत्र रचा जा रहा था जब श्री अजमेरा ने अपनी साइटों और ओबामा को भेजे ई-मेल से खुलासा किया कि ये सुनामी के नाम परमाणु और नाभिकीय बमों का परीक्षण है। 8 अक्टूबर 09 से अचानक सुनामी आना बंद हो गई। ऐसे राक्षस शांति के मसीहा को जो शांति का नोबल कृत्य है पात्र था दिया ही जाना चाहिए था।

पाठकों को बाद में भारतीय महासागर में बसे इन द्वीपों पर बमों के धमाकों का मूल उद्देश्य है कि इन्हें खाली करवाकर या सहायता के नाम पर वहां अमेरिकी सेना का अड्डा बनाकर चीन और भारत को धमका कर कब्जा करनी ही है। इंडोनेशिया, मलाया, सुमात्रा, थाईलैंड में अमेरिकी सैन्य अड्डा बन जाने से भारत, चीन, रूस सब अमेरिका मिसाइलों की मारक क्षमता में आ जाएंगे।

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं
साप्ताहिक समय माया

आयुर्वेदिक औषधियों की जांच की कोई प्रयोगशाला नहीं देश में

आयुर्वेदिक उत्पादक ही बनाते हैं स्तरहीन औषधियां

जिसके जो समझ में आता है बनाकर बेच रहा बाजार में, बकवास है औषधि निरीक्षक

विश्वभर में आयुर्वेदिक औषधियों का बाजार चारों तरफ फैला हुआ है, अधिकांश औषधि उत्पादक भारत में ही औषधियों का उत्पादन करते हैं। इसके विपरीत पूरे भारत में न तो केंद्र और न ही किसी भी राज्य में आयुर्वेदिक औषधियों की स्तरीय और उसके गुणों की जांच व परीक्षण की कोई व्यवस्था न ही है, इसका पूरा लाभ धूर्त जालसाज औषधि उत्पादक भरपूर तरीके से उठाते हैं। यहां सारा खेल विश्वास पर चलता है। यही कारण है कि इस विश्व की सबसे पौराणिक और प्राचीन विधा, सर्वश्रेष्ठ होने के बाद भी अपनी इस स्तरहीनता के कारण अविश्वसानीय होती जा रही है।

स्वयं विष्णु अवतार धनवंतरी ने विश्व में पाई जाने वाली जैविक व अजैविक वस्तुओं के विश्लेषणक कर उसका मानव जीवन पर प्रभाव व उसके औषधिय गुणों की व्याख्या सहस्त्रों वर्ष पूर्व ही कर दी थी।

विश्व के सबसे पौराणिक ग्रंथों की श्रेणी में कहे जाने वाले चार वेदों ऋग्वेद, सामवेद, अर्थवेद और यर्जुवेद या आयुर्वेद की रचना के संबंध में श्रीकृष्ण की गीता में स्पष्ट कहा है कि इस वेदों की रचना स्वयं देवों ने की थी, अर्थात देवों ने ही आयुर्वेद की रचना मानव जीवन को निरोगी, दीर्घायु और सुखद बनाने के मानव सभ्यता के विकास के साथ ही प्रस्तुत कर दिया था।

इस परंपरा के उसके पश्चात हमारे ऋषियों, मुनियों ने अपने दिव्य ज्ञान से लगातार समृद्ध किया, इसके साथ मानव जीवन को निरोगी समृद्ध बनाने के लिए न केवल औषधियों जिसमें वनस्पतियां,खनिज,लवण, जैविक जीवों के औषधिय उपयोग की वृहत के व्याख्या की गई। वरन मानव जीवन पर असर डालने वाले गृहों के असर उनसे उत्पन्न होने वाली बीमारियों और उनके प्रभावों को समाप्त करने के लिए रत्नों, रंगों की वृहत व्याख्या की गई।

इनकी व्याख्याओं के साथ बीज मंत्रों, तंत्रों की संबंधित गृहों नक्षत्रों के प्रभाव को नियंत्रित करने बढ़ाने-घटाने की युक्तियों को आयुर्वेद से लेकर पूजा अर्चनाओं तक में मानव को निरोगी बनाने के साधनों को उपलब्ध करवाया गया। वर्तमान में भारतीय चिकित्सा में इतने सारे साधनों के बाद भी रुग्ण व्यक्ति अधिकांश साधनों के जानकारों, वैद्यों, ज्योतिषियों, पंडितों, महात्माओं, साधुओं के लालच और धन कमाने की प्रवृत्ति से हताश हो जाता है। जबकि ज्ञान, चिकित्सीय सिद्धांत, औषधियां, रत्न, धातुएं, मंत्र-तंत्र, प्रार्थनाएं आदि कहीं भी गलत नहीं है। इन्हें अर्थहीन सिद्ध करता है। मानवीय लालच जो रुग्ण मानव को निराश कर देता है।

फिर आयुर्वेद औषधियों की बात हो तो सबसे ज्यादा बर्बाद करने में अग्रसर रहे हैं। भारतीय आयुर्वेदिक औषधियों को बनाने वाले घोर लालची, स्वार्थीयों, अज्ञानियों, जरूरत से ज्यादा मक्कार, होशियार, धूर्तों, मिलावटियों, के हाथ में हैं। जिन्हें मात्र पैसा कमाने से मतलब है। औषधियों के नाम पर मिट्टी खिलाने से लेकर धीमा जहर तक खिला आयुर्वेद जैसी विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा प्रणाली को न केवल बदनाम कर अविश्वसनीय बना रहे हैं। इस प्रकार विष्णु अवतार धनवंतरी और स्वयं देवों द्वारा रचित आयुर्वेद को पूरी दुनिया में स्वयं बदनाम कर इस चिकित्सा पद्धति को नष्ट करने पर तुले हैं। जबकि ये सारे धूर्तों की फौज यह जानती है कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को नष्ट करने के लिए अमेरिकी षड्यंत्रकारी संगठन विश्व स्वास्थ्य संगठन अपनी अमेरिकी दवाओं को दुनिया में स्थापित करने और बेचने के लिए हर दो-तीन माह में कोई न कोई खबर प्रकाशित करते व करवाते रहते हैं।

जहां तक भारतीय खाद्य एवं औषधि प्रशासन केंद्रीय और सभी राज्यों के पास कोई ठोस जांच प्रक्रिया और प्रयोगशाला न होने के कारण इन आयुर्वेदिक औषधि निर्माताओं जो कि स्तरहीन, नकली, औषधियां बनाते और बेचते हैं को कानून के अंतर्गत पकड़ने और सजा दिलवाने में असक्षम हैं। इसका ये भरपूर फायदा उठाते हैं।

अकेले इंदौर में आयुर्वेदिक औषधि निर्माताओं का एक बड़ा समूह 125 से ज्यादा आयुर्वेदिक औषधि उत्पादित निर्मित कर बेचतेहैं। सारे के सारे धूर्तता के साथ स्तरहीन बिना शास्त्रोक्त पद्धतियों का पालन किए औषधियां के निर्माण में संलग्न हैं। बस एक लायसेंस के सहारे औषधियों का निर्माण कर देश के बदनाम कर रहे हैं। बेशक ये हाल केवल इंदौर का नहीं आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण में डाबर, वैद्यनाथ जैसी जानी मानी कंपनियां भी यही कर रही हैं। दूसरा आयुर्वेदिक औषधियों में अभी भी राष्ट्र स्तर पर कोई भी एलोपैथिक औषधियों के निर्माण से संबंधित डिग्री या डिल्पलोमा पाठ्यक्रम की तरह पाठ्यक्रम का अभाव है जो विद्यार्थी आयुर्वेदिक आयुर्वेदिक औषधियों के निर्मित करने के शास्त्रोक तरीके पढ़ाये व सिखाए जाते हैं जो कि पूर्णतः अपूर्ण है। आयुर्वेद के संबंध में राज्यों या राष्ट्र के स्तर पर कोई भी ठोस कार्य किसी ने नहीं किया। 60वर्ष की आजादी के बाद केंद्र या राज्यों ने इस पर अनुसंधान की आवश्यकताओं, डिप्लोमा, डिग्री पाठ्यक्रम आदि चलाए जाने की कोई ठोस आधारशिला रखी गई।

इन सबका अभाव इस पद्धति को न केवल अविश्सनीय बना रहता है। वरन आयुर्वेदिक औषधि निर्माताओं को भी मनमानी की पूरी छूट दे रहा है। जिससे विश्व की तो दूर राष्ट्र की जनता भी विमुख होती जा रही है। हाल तो यहां तक बिगड़े हैं कि आयुर्वेद की बैचकर डिग्री का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी भी इस डिग्री की आड़ में चिकित्सा एलोपैथिक ही करते हैं। उसके पीछे सबसे प्रमुख कारण आयुर्वेदिक औषधियों में विश्वासनीयता का अभाव ही है। केंद्र व राज्यों के शासनों को चाहिए कि इन सबके लिए ठोस कार्रवाई कर सबसे पहले आयुर्वेदिक औषधियों के स्तर की जांच के लिए केंद्र व राज्य स्तर पर प्रयोगशालाओं का निर्माण किया जाए। दूसरा आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण, उत्पादन के लिए बी-फार्मा इन आयुर्वेदिक मेडिसिन्रस के डिप्लमा और डिग्री पाठ्यक्रमों की चालू किया जाए ताकि आयुर्वेदिक को विश्वस्तर पर विश्वसनीयता की पहचान मिल सके।

स्वच्छ प्रशासन का राग अलापने वाली भ्रष्ट मुखैरी भाजपा

नाच रही भू-माफियाओं की धुन पर

संयुक्त गृह निर्माण कं. के इशारे पर भू अधिनियमों में परिवर्तन

म.प्र. में पिछले 50वर्षों से चल रहा सहकारी गृहनिर्माण संस्थाओं के तंक जिसमें कांग्रेसी और भाजपाई नेता भी अकंठ लिप्त हैं। म.प्र. के इंदौर, भोपाल, उज्जैन, ग्वालियर, जबलपुर, जैसे महानगरों में दिल्ली, बंबई से लेकर दुबई तक की भू-माफिया जालसाज कंपनियों, जिसमें ड़ी.एल.एफ., असंल जैसी दसियों कंपनियां हैं। पहले प्रदेश में घुसकर ऐसी कृषि भूमियां तलाशी जिनसे शासकीय नजूल की, चरनोई की तालाबों, नालों, वनों आंदि की बंजर जमीन लगी हुई थी। आते ही आसपास के कृषकों से जो शहरों के 5-10 किमी के अंदर बायपास, रिंगरोड आदि से लगी थी कुछ खरीदी, कुछ से ठहराव पत्र आधी अधूरी बयाने की राशि देकर कब्जा किया और सरकारी नजूल की चरनोई या बंजर भूमि पर कब्जा कर बाउंड्रीवाल उठाकर बोर्ड लगाकर समाचार पत्रों के माफियाओं भास्कर, राज, नई दुनिया, जागरण, पत्रिका आदि में बड़े-बड़े विज्ञापन देकर जनता से पहले बुकिंग के नाम पर हरामखोरों ने पैसा इकट्ठा कर रो ग्रुप मल्टी स्टोरी, फार्महाऊस की नींव रखवाकर काम शुरू कर दिया, अरबों रुपए की इन योजनाओं में क्षेत्रीय कलेक्टर, पटवारी से लेकर मुख्यमंत्री कार्यालय तक में धन देकर अवैध रूप से कालोनियां खरीदकर दी गई,सिल्वर आर्क, सिल्वर स्प्रिंग, रायल, सहारा, प्यूमार्थ, अपोलो ऐसी अधिकांश कालोनिया विकसित करने वालों ने जब मुख्यमंत्री कार्यालय में मोटी करोड़ों रुपए की भेंटपूजा चढ़ाई और पुरानी सहकारी गृहनिर्माण संस्थाओं के ऊपर वैध अवैध का शिकंजा कसवाया तब न्यायालय पुलिस और प्रशासन सब सक्रिय हो उठा। फिर भी सभी मोटे कांग्रेसी, भाजपाई नेताओं, भू-माफियाओं द्वारा काटी गई कालोनियों और बिना विकास किए गए करोड़ों रुपए की हेरफेर का कोई शिकायतकर्ता भी सामने नहीं आया और न ही नेताओं, जिसमें प्रदेश के पूर्व के वर्तमान के कई सांसदों, विधायकों, नगराध्यक्षों को टाउन एंड कंट्रीप्लानिंग के हरामखोर डकैतों को नगरनिगमों, पालिकाओं, परिषद्रों के इंजीनियरों, कालोनी सेल प्रभारियों को पुलिस के अधिकारियों, प्रशासनिक आई.ए.एस.स एस.ए.एस. अधिकारियों को जिनको इस बंदरबांट में प्लांट दिए गए जो उन्होंने अपने निकट संबंधियों के नामों से लेकर होटलें, होस्टल, स्कूल, कालेज, हास्पीटल्स खोल दिए वे सब डकैत अभी भी वास्तविक सरकारी कार्यवाहियों से बचे छुपे खड़े हैं। हर गृह निर्माण सहकारी संस्था में सहकारी संस्थाओं के उपायुक्तों, सहा. आयुक्तों जो पंजीयन, चुनाव, निगरानी, अंकेक्षण आदि करते थे इन सब संस्थाओं में ये सारे खेल के मूल खिलाड़ी थे। किसी पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई। इन सबके भी इन कालोनियों में धन के साथ प्लाट भी है, क्यों जब्त नहीं किये जाकर वास्तविक धन खर्च करने वाले सदस्यों को बांटे जा रहे। अब जबकि ये छुटभय्यो की सारी करतूतें सामने आ ही चुकी हैं। इन कार्पोरेट राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय भू-माफिया कं. के धन खर्च करके प्रशासन पर दबाव बनाने के कारण कार्यवाही की जानी चाहिए।

इसके साथ ही सन 2003 के बाद से आई कार्पोरेट कं. जिनमें सहारा जैसे बड़े जालसाज भूमाफिया भी हैं वर्तमान में 100 **शेष पृष्ठ- 7 पर**

जलप्रबंधन-पूरे प्रदेश में राजनैतिक डकैतों का शिकार

जल वितरण लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय के हाथों में ही बेहतर

पूरे म.प्र. में जल वितरण की समस्याएं न केवल बढ़ेगी और न केवल बढ़ रही है, वरन् जल की आवश्यकता अब रक्त पिपासु होती जा रही है जिसका मूल क्षेत्रीय संस्थाओं जो राजनीतिक प्रतिनिधियों के हाथों का खिलौना होती है, हरामखोर ये पंचों, सरपंचों से लेकर पार्षदों की कमाई और अपनों को उपकृत और परायों को निराकृत और प्रभाव दिखाने का साधन बन चुकी है। क्षेत्रीय राजनीतिक चुने हुए प्रतिनिधि डकैतों के लिए, लूट, वसूली और कमाई का साधन है, वहां तक चुप भी रहा जा सकता है, परंतु दूसरी तरफ ये ही पार्षद राजनीतिज्ञ न तो स्वयं बिल भरते हैं न ही उनके समर्थक बिल भरते हैं।

साथ ही अमीर सबको राजनीतिज्ञों को चंदा बांटकर जो टुकड़े डालकर इन श्वानों के दम पर अपने बिलमाफी अवैध नल कनेक्शनों से न केवल भरपूर जल का उपयोग करते हैं, वरन अपने आंगन और बंगलों के चारों तरफ की जमीनों की भी सिंचाई करते हैं कारो को नर्मदा के छने और साफ पीने योग्य पीने के पानी से नहलाते हैं, कूलरों, कुत्तों बिल्लियों को भी नहलाते है। चाहे उनके सामने ही पीने के पानी के लिए संघर्षों में खून बहे तो बहे पर इन मोटी चमड़ी के अमीर शूकरों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, प्रदेश के 50 जिलों, तहसीलों से लेकर गांवों तक के क्षेत्रीय प्रतिनिधि के प्रशासनिक नगर निगमों, पालिकाओं, परिषद्रों से लेकर जनपद पंचायतों ग्राम पंचायतों तक चारों तरफ जल वितरण की यही हालत है, जहां इन राजनीतिक डकैतों के सहयोगी

40% केवल मध्यमवर्गीय ही पैसा देता है, बाकी सब उपयोग

समर्थकों, रिश्तेदारों, चाहने वालों को वैध-अवैध तरीकों से अनाप-शनाप पानी न केवल नलों से वरन टैंकरों से भी आपूर्ति की जाती है। वहीं दूसरी ओर पानी के नियमित बिल भरने वाले निम्न मध्यम, उच्च मध्यमवर्गीय तक पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस जाते हैं। गरीबों के गांवों में अभी 3-5 किमी तक पानी ले जाना पड़ रहा है।

इसके विपरीत हरामखोर सरकारी अधिकारियों मंत्रियों, नेताओं, पार्षदों, उद्योगपतियों, पूंजीपतियों के लिए पानी की कहीं कोई दिक्कत नहीं होती, उज्जैन, पन्ना, छतरपुर, सागर जैसे घोर जलसंकट वाले क्षेत्रों में भी नहीं, यही कारण है कि ये हरामखोर धूर्त श्वानों को पानी आम जनता के वितरण के मामले में कमाई, लापरवाही और उपेक्षा का कारण बन जाता है, जबकि ये उच्च वर्गीय डकैत सरकारी अधिकारी पूंजीपति उद्योगपति पार्षद नेता, मंत्री, महापौर तक नलों के वर्षों से बिल नहीं भरते हैं। इन्हें पर्याप्त मुफ्त में पानी मिलता रहता है। इन श्वानों, धूर्तों और जनता को नोंच कर खाने वाले गिद्धों को बिल न भरने के बारे में जरा भी शर्म नहीं आती, इसीलिए ये चाहते हैं कि पानी के नाम पर क्षेत्रीय संस्थाओं के पास रहे पानी की व्यवस्था और ये उस पर लूटपाट और डकैती डालकर करोड़ों की कमाई करते रहे।

दूसरी तरफ जिला जल संग्रहण केंद्रों, तालाबों, स्टाप डेमों, में पानी संग्रहित किया जाता है। रास्ते से गुजरने वाली पाईप लाइों से रास्ते में पड़ने वाले किसान, फैक्ट्रियां भी पर्याप्त न केवल जल का दोहन करती रहती हैं वरन पानी वर्षभर बेचा भी जाता रहता है। यह बात न केवल उज्जैन के गंभीर बांध, वरन इंदौर, देवास आदि के साथ पूरे प्रदेश के नगरीय जल संग्रहण केंद्रों की है। जानबूझकर नेता, पार्षद, स्वयं ही अपने तत्कालीन स्वार्थों की आपूर्ति भ्रष्टाचार और वसूली हेतु ऐसे दुष्यकृत्यों को अंजाम देते हैं, ताकि बाद में आम नागरिक परेशानी में पड़ जाता है।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विभाग के अधिकारी बेशक भ्रष्ट होते हैं, परंतु वो वोटो की राजनीति के ऊपर समान जल वितरण व्यवस्था जलाशयों, पाईप लाइनों से मोटर लगाकर पानी चुराने वालों की मोटरें जब्ती से राजस्व वसूली की उचित व्यवस्था स्वयं कार्यवाही करने के साथ न्यायालयों में प्रकरण और पुलिस कार्यवाही भी बेहतर ढंग से बिना राजनैतिक हस्तक्षेप के कर सकते हैं।

यह तथ्य राजनेताओं, मुख्यमंत्रियों, मंत्रियों को भले ही तत्काल समझ आए न जाए परंतु इंदौर उच्च न्यायालय की खंडपीठ के मई-जून के निर्देशों और फैसलों से जो जल वितरण के संबंध में संभागायुक्त और जिलाधीश की दिए गए थे भी स्पष्ट हो चुके हैं कि जल वितरण व्यवस्था को तत्काल ही क्षेत्रीय नगरनिगमों, पालिकाओं, जनपदों, पंचायतों, से छीनकर लोकस्वास्थ्य यांत्रिकीय विभाग को सौंप दी जाए, ताकि जल वितरण और राजस्व वसूली व्यवस्था दीर्घकाल में ढंग से की जा सके। इन जल की चोरियों, मोटरों से पानी खींचने के कृत्यों को प्राश्रय देते हैं। इंदौर के यशवंत सागर तालाब में सूखने के साथ ही किसान न केवल वहां खेती करने लगते हैं वरन यूरिया, सुपर फास्फेट जैसे रासायनिक खादों के साथ सभी घातक विषैले कीटनाशकों का प्रयोग कर उस जल संचयन क्षेत्र की मिट्टी को भी भारी जहरीला बनाकर आम जनता के जीवन से भी खिलवाड़ करते हैं।

बी.एस.एन.एल. के फोन और मोबाइलों से उपभोक्ता परेशान

डाट के श्वान बर्बाद कर रहे बी.एस.एन.एल.

बड़े अधिकारी तनखैय्या है निजी मोबाइल कं. के

पूरे राष्ट्र में भारत संचार निगम लि. के करोड़ों फोन और मोबाइल उपभोक्ता नेटवर्क की गड़बड़ी, बार-बार फोन करने, लाइनों के खराब होने, काल ड्रापिंग लगाने पर उल्टे सीधे जवाब मिलने जैसे कि कवरेज क्षेत्र के बाहर है व्यस्त है, बंद है जैसे संदेश सम्पर्क करने वालों को सुनना पड़ते हैं फोन लाइनें जब तक देखों बंद हो जाती है? बांड बैंड की स्पीड बहुत कम मिलती है या जब चाहे बंद हो जाती है।

इसके पीछे का वास्तविक सच यह है कि उपसंभागीय इंजीनियर से लेकर जीएम, सीजीएम से लेकर दिल्ली तक बैठे एफडी अध्यक्ष तक सारे अधिकारियों की शूकरों की फौज वास्तविकता में भारत संचार निगम लि. से वेतन आवश्य ले रहे हैं, परंतु वो सभी अधिकारी भारत सरकार के दूर संचार विभाग के हैं। जबकि गैर तकनीकी और सुपर वाइजर से लेकर नीचे लाईन मेन तक सभी भारत संचार निगम के कर्मचारी हैं। इसलिए उ सभी धूर्त और भ्रष्ट अधिकारियों बी.एस.एन.अल. से उसके कर्मचारियों से कोई लेना देना नहीं। उन हरामखोर गिद्धों को निगम को लूटने, खसोटने, वसूली करने से ही मतलब है। ये सारी बीएसएनएल उपभोक्ताओं को यो जानबूझकर परेशान करने और उन्हें मोबाइलों फोन ब्रांड बैंड सेवा के उपभोक्ताओं से अलग करने का पूरा पूर्व नियोजित षड्यंत्र के तहत ही सब कुछ किया जा रहा है। इसके अंतर्गत टावर्स में ट्रांसमीटरों, रिसीवरों की तरंग दैर्ध्य को कम करना, बंद कर देना, एसएमएस, एम.एम.एस. सेवाएं बंद कर देना या गंतव्य तक न पहुंचने देने के षड्यंत्र भी शामिल है।

डाट के अधिकारियों को इस प्रकार निगम के उपभोक्ताओं को परेशान कर अलग करने या नए कनेक्शन लेन दूसरी कंपनियों तक उपभोक्ताओं का पहुंचाने के बदले में डॉट के शूकरों को हर निजी क्षेत्रों की कंपनियों यथा टाटा, रिलायंस, एयरटेल, वोडाफोन, हच, एस्सार, टचटेल, आइडिया आदि से अप्रत्यक्ष रूप से तनख्वाह या मोटी रिश्वत छोटे-छोटे गांवों से लेकर दिल्ली स्थित मुख्यालय तक बांटी जा रही है। पिछले पांच वर्षों से ज्यादा वर्षों से यह एक अप्रत्यक्ष समझौता है। और इसके अंतर्गत इस देश के सबसे पुराने संचार निगम को बर्बाद किया जा रहा है। इसके अंतर्गत इन अन्य संचार कंपनियों ने इन डॉट के गिद्धों को कहीं नगद का तनखैय्या बना रखा है तो कहीं इन डॉट के शूकरों को बीबी, बेटों, बेटियों, नाती-पोतों बहुओं के दामादों को मोटी तनख्वाह पर अपने यहां नौकरियां देकर खरीद रखा है।

शेष पृष्ठ-5 पर.....

मप्र लोनिवि में आई.ए.एस. की लूट का तांडव

मु.अ.कां. को बंद करने का सुलेमानी षड्यंत्र

श्वानों की फौज इंजीनियर इन चीफ के पद पर आईएएस बैठाएगा

भोपाल। इंडियन एव्यूसिंग का धूर्त, डकैत शूकर सुलेमान म.प्र. लोक निर्माण विभाग को पूरी तरह से चौपट करने पर तुला है। वैसे भी जैसा कि उच्च शासकीय स्तर पर कहावत है कि जहां इंडियन एव्यूसिंग सर्विस के उल्लू बैठेंगे वहां-वहां बंटाढार हो जाएगा। उसका सबसे बड़ा उदाहरण है वर्तमान में सुलेमान म.प्र. लोक निर्माण विभाग का सचिव, ये हरामखोर श्वान पूरी लोक निर्माण विभाग को किस तरह से नोंचखसोट कर न केवल बर्बाद वरन पूरी तरह से बंद करने के लिए हर कदम-कदम धीरे-धीरे ऐसे षड्यंत्रों की रचना कर वहां बैठे इंजीनियरों को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने के लिए मंत्री नागोद और मुख्यमंत्री शिवराज को मूर्ख मानते हुए एक तो अधीक्षण यंत्री शैलेंद्र शुक्ला धूर्त को जो कि यांत्रिकीय और विद्युत का होने के बाद भी प्रमुख अभियंता के पद पर बैठा दिया। इस भ्रष्ट को सिविल की न तो ढंग से से एबीसीडी आती है, न ही उसका ये जानकार है, फिर भी अधीक्षण यंत्री होने के बाद पहले 4-5 वर्ष तक सिविल में कभी नर्मदा विकास प्राधिकरण में पुर्नवास व पुर्ननिर्माण में मुख्य अभियंता के पद पर बैठ कर करीब रुपए 400 करोड़ डकार कर उल्टे-सीधे निर्माण कार्य करवा कर खिसक लिया जब उसकी जांच की बात उठी तो फिर राष्ट्रीय राजमार्ग कामुख्य अभियंता बन गया, यहां पर भी दो तीन साल में कम से कम रुपए 100 करोड़ से ज्यादा की कमाई की अकेले इंदौर-नेमावर 145 किमी मार्ग में सन 03-04 में रुपए 236 करोड़ रुपए स्वीकृत हुए थे। कम से कम दो लेन सड़क बनाने के लिए देश के इस सबसे घटिया राजमार्ग की हालात आज भी यथावत है और पूरा पैसा साफ हो चुका है, अब उसे राष्ट्रीय राजमार्ग विकास प्राधिकरण को सौंप कर लेन बनवाने की तैयारी का जा रही है। पूर्व का पैसा कहां गया सूचना के अधिकार में पिछले 4 वर्ष से ज्यादा पत्र दिए गए, अंतिम अपीलें लगाई गई पर सूचना आयोग में बैठे शूकर इकबाल अहमद, दिनेश जुगरान और पी.पी. तिवारी, हरामखोर दोनों हाथों से वसूली करने में जुटे रहकर आवेदकों को दौड़ा-दौड़ा कर परेशान कर रहे हैं, पर जानकारी दिलवाना नहीं चाहते।

गिद्ध सुलेमान की निगाहों में सबसे ज्यादा खटक रहे हैं। 10 मुख्य अभियंता पर उनके संभागीय स्तर के कार्यालय उन सबको बंद करने के लिए ये मुखैरे भ्रष्ट लुटेरे राकेश साहनी के साथ मिलकर लो.नि.वि. मंत्री नागोद और मु.मं. चौहान को पट्टी पढ़ा रहे हैं। ताकि 10 मुख्य अभियंताओं और उनके स्टाफ दो-तीन अधीक्षण यंत्री व 6 से 8 कार्यपालन यंत्री होते हैं। उनका जमीनी हकीकतों से बिलकुल न केवल वास्ता समाप्त हो जाए कार्य की गुणवत्ता **शेष पृष्ठ- 6 पर.....**

डोडी में 40 कब्रों को रास्ते से हटाया

इस देवास-भोपाल सुपर कारीडोर में पुलिस चौकी के निकट रास्ते में आ रही 40 कब्रों को सचिव और संचालक म.प्र. सड़क विकास निगम सुलेमान ने जबकि ये स्वयं मुसलमान हैं और मुस्लिम धर्म में मस्जिद को हटाने के लिए व्यवस्था है पर कब्रों को हटाने की व्यवस्था न होने के विपरीत भी चुपचाप बाले-बाले कब्रों को हटा दिया गया। क्या हुआ होगा ये सब जानते हैं इस बात की खबर वक्फ बोर्ड भोपाल वहां के काजी और मौलवियों को लग चुकी है। जबकि मामला सुनसान का है आसानी से 200-500 मी. सड़क घुमाई जा सकती थी, परंतु मूल डिजाइन के बलाए ताक में रखकर ठेकेदार एम.एस.के. एसोसिएट व सुलेमान ने अपनी सुविधा और लागत में बचत करने के लिए कारनामा कर दिखायाष ये प्रकरण भी भोपाल में मंत्रालय, प्रशासन और मुस्लिम समुदाय में उबल रहा है। म.प्र. का धूर्त महाभ्रष्ट मुख्य सचिव राकेश साहनी और सुलेमान मिलकर कैसे मुख्य मंत्री चौहान और मंत्री नागोद को नचाकर पूरी भाजपा की छवि को न केवल बर्बाद करने पर वरन कांग्रेस की तरह महाभ्रष्ट निकम्मों, जालसाजों, लुटेरे गिद्धों की पार्टी सिद्ध करने पर तुले हैं।

भ्रष्ट आई.ए.एस. गिद्ध नोंच-खसोंट में बर्बाद कर रहे प्रदेश

शिव कठपुतली बन नाच रहे असुरों की धुन

भ्रष्ट, अपराधी, अधिकारी टुकड़े डाल पा रह पदोन्नतियां कर रहे भ्रष्टाचार का तांडव

भोपाल। म.प्र. के प्रशासनिक फौज में बैठी भ्रष्ट इंडियन एव्यूसिंग सर्विस के अधिकारी जो महाधूर्त, महामक्कार, महाराक्षस, प्रवृत्ति के होते हैं, जिन्हें अपने कुकर्मों के आगे न तो कोई मंत्री दिखता है, न मुख्यमंत्री और राज्यों से आगे बढ़ें तो देश की सत्ता में बैठे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री भी उनकी शतरंज की बिसात पर बैठे मोहरों से ज्यादा उन हरामखोरों के लिए कुछ भी नहीं होते।

इस देश की प्रदेश की बर्बादी के लिए ये राक्षसों की फौज ही सबसे ज्यादा जिम्मेदार होती है, जो राष्ट्र की जनता को ही नहीं वरन राष्ट्र के प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से लेकर कानूनों को भी अपनी जेब में रखती है, नेता, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आते और 5वर्ष में चले जाते हैं। अगर इनकी मेहरबानी और निगाहें रहम हुई तो ही कोई दूसरी बार पुनः पद संभाल पाता है। वरना तो ये कब किसको कहां एक मिनिट में बर्बादी तो दूर कानूनों में उलझाकर कारावास की व्यवस्था करवा देवें इसका तक कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। स्व. इंदिरा गांधी से बदला लेने के लिए स्व. मोरारजी देसाई की सत्ता में जेल पहुंचाने का निर्णय इन्हीं का था जिसे मोरारजी ने हामी भर दी। ये शूकरों की फौज वहीं की वहीं बैठी रही और मोरारजी भाई व उनकी जनता पार्टी पूरी सत्ता से बाहर हो गई।

इनके अपने स्वार्थपूरा करने के लिए ये किसी भी हद तक देश की जनता को अपने ऊपर बैठे नेता, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति की बर्बादी के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। इनकी निगाह में राष्ट्रपति एल्शेसियन डॉग, प्रधामंत्री देशी पेट डाग, मुख्यमंत्री, मंत्री सब देशी सड़क के श्वानों से ज्यादा कुछ नहीं, जनता चींटी, चिंटों से ज्यादा नहीं होते, इनकी निगाह में कानून, न्यायालय सब रखेलों की भांति इनके लात जूते खाकर भी इनकी दया व रहमों करम के भूखे होते हैं। इनकी नियुक्तियों स्थानांतरणों, पदोन्नतियों, विभागीय जांचों के सारे काम अप्रत्यक्ष रूप से ये ही देखते संभालते हैं।

यह हाल पूरे देश में केंद्र सरकार से लेकर राज्य सरकारों और संघ शासित प्रदेशों में इस देश के सबसे खुदा इंडियन एव्यूसिंग सर्विस अधिकारियों का है जो जिला पंचायतों के मु.का.अ. और जिलाधीशों से लेकर राष्ट्रपति भवन तक बर्र के छत्तों की तरह छाए हुए हैं। स्वाभाविक है प्रदेश हमारा इससे कैसे अलग हो सकता है। यहां भ्रष्ट मुख्य सचिव राकेश साहनी से लेकर नीचे तक हरामखोरों की ये फौज जो मुख्यमंत्री शिव चौहान से लेकर हर विभाग के मंत्रियों से लेकर सांसदों, विधायकों, जिला पंचायत अध्यक्षों, नगर पालिका निगमों परिषदों के महापौरों, जनपद अध्यक्षों, सरपंचों को तक को अपना मोहरा बनाकर नचाती है। दूसरी तरफ ये दोनों हाथों से धन बटोरकर नियमों, कानूनों को बलाए ताक पर रखकर देश और प्रदेश के नेताओं, मंत्रियों, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को सामने रखकर चौपट करने पर तुले हुए हैं।

म.प्र. में मुख्य सचिव राकेश साहनी, प्रधानसचिव पीडी मीना और सचिव शूकर सुलेमान कैसे प्रदेश की सड़कों को राष्ट्रीय राजमार्ग से छीनकर ठेकेदारों को बीओटी में देकर उल्टी सीधी बनवा कर उन पर भी टोल वसूल रहे हैं। चाहे वो सिंगल लेन हो, डबल लेन हो या फोर लेन बस इन हरामखोरों को मोटा कमीशन दे दो, फिर वाहन चालकों को दोनों हाथों लूटों काहे के नियम कायदे, कानून इसके लिए ये तीनों मिलकर अपने रास्ते के काटों जिसमें मुख्य अभियंताओं और उनके कार्यालयों तक को बंद करवाने पर तुले हैं। ताकि ये शूकरों की फौज जैसा चाहे लूटे।

भ्रष्टों की सूची में अनुराग जैन एस.आर. मोहंती, पी.के. दास, विनोद चौधरी, गृह सामान्य प्रशासन प्रदीप भार्गव, नर्मदा घाटी श्रीमती रंजना चौधरी, प्रशांत मेहता, दिलीप मेहरा, म.के. राय, प्रमुख सचिवों में एम.के. राय, ओपी रावत, सत्यप्रकाश देवेंद्र सिंघई, अशोक दास ए.के. जोशी, श्रीमती टीनू जोशी, एम.एम. उपाध्याय, प्रवेश शर्मा, जे.एस. शर्मा, राघव चंद्रा, स्नेहलता श्रीवास्तव, डी.आर. बिरदी, मनोज गोयल, एम.ए. खान, विजया श्रीवास्तव, आलोक श्रीवास्तव, आर.के. सवाई, सेवाराम, सुदेश कुमार, नरेश कुमार गुप्ता, इनके साथ ही अपर सचिवों, आयुक्तों, संचालकों, जिलाधीश के रूप में बैठे 150 से ज्यादा अधिकांश इंडियन एव्यूसिंग सर्विस के सभी हरामखोरों का यही हाल है।

वैसे भी प्रदेश सरकार में बैठे अधिकांश मंत्री सुरा सुंदरी के शौकीन हैं। जिन्हें किसी भी विभाग का अधिकारी सुरा सुंदरी पेश कर वह कितना बड़ा भी अपराधी हत्यारा ही क्यों न हो आसानी से अपनी इच्छापूरी करते हुए भ्रष्टाचार से धन लूटता है और लुटाता है। आसानी से पदोन्नति लेकर जम जाता है। म.प्र. लो. स्वास्थ्य यांत्रिकीय को ही देखें मुख्य अभियंता इंदौर के पद पर बैठे डामोर ने लो.स्वा. यां. मंत्री को भी धन और सुरा सुंदरी से बांधकर भ्रष्टाचार के लोकायुक्त के आर्थिक, अपराध और अनेकों विभागीय जांचे होने के बाद भी न केवल प्रमुख अभियंता सलाहकार का पद तो हथिया ही लिया दूसरी ये जालसाज हत्यारा, मुख्य अभियंता के पद पर बैठकर भी रुपए 10 से 15 करोड़ रुपए प्रतिवर्ष की भ्रष्टाचार से कमाई के लिए इस पद पर भी जमा हुआ है।

म.प्र. स्वास्थ्य विभाग में भी देखें। यहां का मंत्री अनूप मिश्रा भी धन कमाई के साथ सुरा सुंदरी का शौकीन है, वहां पर बैठा भ्रष्ट संचालक डॉ. अशोक शर्मा ने भी मंत्री को ऐसे ही उलझा कर दोनों हाथों केंद्र व राज्य के धन में अरबों रुपए की खरीदी कांड में दोनों हाथों कमीशन लूट और डकार कर स्वयं भी वारे-न्यारे कर रहा है और मंत्री पी.एस. सचिव को भी लुटा रहा है। जबकि ये वही डॉ. अशोक शर्मा है जिस पर आयकर और लोकायुक्त का छापा भी पड़ चुका है।

इसके विपरीत दोनों हाथों लूटपाट का तांडव जारी है। यही हाल हर विभाग और वहां बैठे अधिकारियों का है जो चारों राक्षसों की भांति जनता के धन को लूट कर डकार रहे हैं। चाहे वो जमीनों का मामला हो, परिवहन, महिला बाल विकास नागरिक आपूर्ति, लोक निर्माण लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण विकास उद्योग व वाणिज्य, विद्युत, नर्मदा घाटी, वन, गृह, वित्त योजना, शिक्षा, नागरिक आपूर्ति, कृषि, खनिज, आदिम व अनु. जाति विकास जल संसाधन, श्रम, पुनर्वास आदि सभी में बैठे गिद्धों और असुरों का साम्राज्य है। जिसमें शिवराज अकेले घिरे हुए अपना कार्यकाल पूरा करने में जुटा है।

विभागीय संभागीय कार्यालयों 4 वर्ष से ज्यादा हो गए प्रारंभ हुए

अधिकार सम्पन्न बनाया जाए विभागीय संभागीय कार्यालयों को

अधिकार विहीन बैठाकर वेतन ले रहे भरपूर उपयोग निगरानी जांच में लगाएं

म.प्र. शासन ने विभागीय संभागीय कार्यालयों का 4वर्ष पूर्व ही पुर्नस्थापित करके जो अच्छा काम किया था उसका मंत्रालय स्तर पर आलस मक्कारी के चलते 4 वर्षसे उपयोग नहीं किया जा रहा है। ऐसे सभी संभागीय कार्यालयों में बैठे अधिकारी छोटीमोटी कागजी उठापटक कर मुफ्त का वेतन ले रहे हैं। आखिर क्यों? जो अधिकार और शक्ति स्पन्नता उनके पास पूर्व में थी अर्थात 1998 के पूर्व झैसे सरे विभागीय कार्यालय संभाग स्तरों पर कार्य कर रहे थे पुर्नस्थापना में उन्हें वो अधिकार न देकर स्वयं शासन उनका सदुपयोग नहीं कर पा रहा है।

यह हाल संयुक्त संचालक महिला बाल विकास उद्यानिकी की एवं सामाजिक वानिकी म.प्र., कृषि विकास और कृषक कल्याण खनिज विभाग, मत्स्त्य, रेशम, म.प्र.स्वास्थ्य एवं चिकित्सा व उससे संबंधित विभाग, म.प्र. पशु चिकित्सा आबकारी पंचायत एवं समाज कल्याण, जिला उद्योग केंद्र, ग्रामीण यांत्रिकीय भू अभिलेख, मुद्रांक एवं पंजीयन म.प्र. नापतौल, कृषि उपज मंडियो, म.प्र. सहकारिता विभाग, नगर एवं ग्राम निवेश जनसम्पर्क, नियोजन, नेहरू युवा केंद्र, म.प्र. नागरिक आपूर्ति एवं खाद्य विभाग, वेयर हाऊसिंग, म.प्र. खाद्य निगम, म.प्र. रोजगार सेवाएं आदि अधिकांश विभागों को संभागीय कार्यालयों को जिले के विभागीय अधिकारियों के कार्यों की सूक्ष्म देखरेख सूचना के अधिकार में जिला अधिकारियों की अपीलें सुनना जिलों के अधिकारियों की क्षेत्रीय अधिकारियों की अपीलें सुनना। जिलों के अधिकारियों की क्षेत्रीय व संभागीय स्तर की समस्याओं को सुनना, स्थापना संबंधित समस्त कार्य, खरीदी और माल की गुणवत्ता को जांचने टेंडरिंग पर नियंत्रण करने, फील्ड की गतिविधियों, कार्य के सुचारू रूप से चलने वितरण व्यवस्था पर नियंत्रण विभागीय जांच आदि के जिलों के सभी कार्यों को संभागीय स्तर पर सुलझाया जा सकता है।

सैन्य प्रबंधन की तरह मुख्यालयों को संभागीय अधिकारियों से और संभागीय अधिकारियों, संयुक्त संचालकों को उपसंचाकों, उपायुक्तों को जिला अधिकारियों से प्रबंधित किया जाना चाहिए। इससे सभी विभागीय मुख्यालयों की तरह हर निर्देश के लिए नहीं देखना पड़ेगा और बार-बार मुख्यालय भोपाल की तरफ दौड़ नहीं लगाना पड़ेगी। जिला अधिकारियों को जिला अधिकारियों के नियंत्रण,. देखरेख, गुणवत्ता, निर्धारण जांच आदि के कार्यों गतिविधियों आदि की जानकारी संभागीय स्तर पर संधारित की जाकर ही मुख्यालय को भेजी जानी चाहिए। इससे तरीके से संभागीय स्तर पर ही संभाग के जिलों का प्रबंधन समस्या निदान, निर्देश जांच, आदि के कार्यों के सम्पन्न किया जा सकेगा।

वर्तमान संभागीय स्तर के कार्यालय तो कार्यरत है, परंतु अधिकार व शक्तिहीन होने के कारण वे जिला अधिकारियों के ऊपर नियंत्रण योग्य नहीं है, भोपाल में बैठे अधिकारियों के पास प्रदेश के 50 जिले हैं, बार जांच, मानीटरिंग कार्य की गुणवत्ता देखने, राजधानी में मुख्यालय में बैठे अधिकारी जाना-आना कर नहीं पाते। इसलिए आवश्यकता है कि जिलों की इकाई के ऊपर संभागीय स्तर पर बैठे अधिकारी छोटा क्षेत्र होने के कारण मुख्यालय के कार्यों को संभागीय स्तर पर ही सम्पन्न कर सके, स्थापना संबंधी कार्यों, नियुक्तियों, पदस्थापना स्थानांतरण वेतन निर्धारण, वितरण यात्रा व्यय, चिकित्सा आदि से लेकर कर्मचारियों अधिकारियों की पेंशन आदि विभागीय जांच शिकायतें, सबको संभागीय स्तर पर ही सुलझाया जाना चाहिए। इसलिए आवश्यक है कि जैसे कार्य सम्पन्न करने वाले लोक निर्माण विभाग, लोकस्वास्थ्य यांत्रिकीय, जल संसाधन की तरह ही संभागीय स्तर के कार्यालयों को भी पूर्व की तरह अधिकार सम्पन्न बनाकर उन्हें दिए जा रहे वेतन की भरपूर कार्य लेकर वसूली की जाए।

भाजपा का कमजोर होना राष्ट्र व राज्यों के लिए घातक

अपने ही चिराग कर रहे आशियां खाक

महाराष्ट्र, अरुणाचल और हरियाणा में भाजपा की हार

राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा की कलह ने जहां एक बार लोकसभा में पटखनी दी वहीं हाल ही में सम्पन्न हुए महाराष्ट्र, अरुणाचल और हरियाणा में फिर भाजपा ने मुंहकी खाई, वहा पुनः कांग्रेसियों ने दूसरी बार सत्ता हथिया ली।

जबकि तीनों ही प्रदेशों में सत्ता के विरुद्ध लहर थी। परंतु विपक्ष इतना बिखरा हुआ था कि जनता ने चाह कर भी वोट देने की तो दूर सोचने काबिल भी नहीं छोड़ा था।महाराष्ट्र में शिवसेना में बाल ठाकरे के खानदान में ही न केवल सिर फुटव्वल होती रही, वरन् मनसे, शिवसेना में ही आपसी मतभेदों ने शिवसेना को तोड़ दिया। बाल ठाकरे की दहाड़ में बुढ़ापे का असर तो आया ही भाजपा ने भी महाराष्ट्र में अपने संगठन को भी सम्य रहते मजबूत बनाने में दिलचस्पी नहीं ली जबकि हारने के बाद फुर्सत में बड़े आराम से संगठन को भी न केवल मजबूत बनाया जा सकता था और जनता की परेशानियों, भ्रष्टाचार, महाराष्ट्र में बढ़ते माफिया राज को आतंक अपराधियों का शरणस्थली के रूप में विकसित होते प्रदेश की जनता में गहरे पैठ बनाई जा सकती थी। इसके विपरीत हार जाने की मायूसी ने पांच वर्षों में भाजपा के संगठन को उल्टे ही कमजोर कर दिया।

हरियाणा में उपमुख्यमंत्री चंद्रमोहन उर्फ चांद मोहम्मद कांड में भाजपा के संगठन को बुरी तरह से न केवल तोड़ा वरन भाजपा की छवि पर कालिख पोत दी, परिणाम सामने हैं।

इन सबके साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर जसवंत सिंग का जिन्ना प्रेम उनका निकाला जाना एक दूसरे के विरुद्ध आरोपों-प्रत्यारोपों और जो देश का वित्तमंत्री रह चुका उस चिराग को पार्टी से बाहर निकालने के बाद उसने अपने ही आशियां को खाक करने का भी भरपूर प्रयास किया परिणाम सामने है।

जब चिराग ही अपने आशियां फूंकने लगे तो जनता तो भारत की पहले गुलाम मानसिकता की, घोर स्वार्थी डरपोक है। स्वभाविक था उसका किनारा करना उसने किनारा करके बता दिया कि आपस में ही एक होकर नहीं रह सकते तो हम बिखरती कलम की पंखुड़ियों पर वोट देकर क्यों बर्बाद करें?

राष्ट्रवादी संगठनों को सीख

अब भाजपा रा.स्व.सं., बजरंग दल, विश्व हिन्दू परिषद्, शिवसेना जैसे हिन्दुवादी संगठनों को जनता ने लगातार हार के हार पहनाना शुरू कर दिए हैं। इन्हें संगठन का आधार भूत जड़ों पर लौटकर सत्य और निर्मल हृदय से न केवल अपने मूलाधार की तरफ ध्यान देकर मजबूत करना होगा छुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र हित की दीर्घायु सोच को विकसित करना चाहिए।

ये सभी संगठन सबसे पहले अपने आप को ठोस बनाएं और संगठन की आधारभूत जड़ों को मजबूत करें और जनता से जुड़े वास्तविक मुद्दों को साथ लेकर चलें, ताकि जनता का विश्वास जीता जा सके। ये सभी संगठन ये मानकर चलें कि उन्हें जनता ने नहीं वरन आपसी सिर फुटव्वल ने अर्श से फर्श पर ला पटका है। जनता को इन सभी संगठनों की काश्मीर से कन्याकुमारी तक और मुम्बई से अरुणाचल प्रदेश तक सब ही जगह न केवल भारी जरुरत है वरन जनता अपनी ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासतों के ऊपर लौटना चाहती है, वरन उनके साथ उनमें रम कर जीना चाहती है, दिल से कोई भी भारतीय नागरिक अपनी परंपराओं, संस्कृति, समृद्ध इतिहास, धर्म, राष्ट्रीयता के विरुद्ध जाना नहीं चाहता, परंतु दुर्भाग्य यह है कि कोई भी राष्ट्रीय स्तर पर संगठन उन्हें उठाना भी नहीं चाहता। अपना बनाकर दिल से लगाना ही नहीं चाहता, अब जब राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा ने मुंहकी खाने के बाद राज्यों में मुंहकी खाना शुरू कर ही दिया हो, कुछ भी नहीं बिगड़ा वरन सुधरने, सोचने, समझने और मजबूत होकर आगे बढ़ने का मौका दिया है।

हर हार मौका मिलते ही जीतने क लिए ठोस तरीके से प्रयास करने का सबक सिखाती है, भाजपा, विहिप, आर.एस.एस., बजरंग दल, को पुर्न संगठित होकर क्षेत्रीय स्तर पर भी अपने-अपने छोटे दलों को विकसित करना चाहिए जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इन बड़े दलों से न केवल जुड़े रहे वरन क्षेत्रीय स्तर पर अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को विकसित करने के साथ हर समाज के घर से जुड़े रहे ताकि धर्म परिवर्तन न हो सके। किसी भी आपदा, परेशानियों में एकजुट होकर समाज को संभाले।

इन सभी संगठनों को ये मानकर चलना ही होगा कि कांग्रेस को सत्ता भले ही मिल गई हो सत्ता में कठपुतली प्रधानमंत्री मनमोहन देशी नागरिक बैठा हो परंतु कांग्रेस की पूरी सत्ता वाशिंगटन और रोम के पोप द्वारा चलाई जाती है। भारत में जिसका आक्रोश न केवल हिन्दुओं में वरन मुसलमानों में भी है। भारत का मुस्लिम देख रहा है कैसे मुस्लिम विश्व को अमेरिका नचा रहा है और आतंकवाद के दल दल में झोंक कर अफगानिस्तान को पाकिस्तान को बर्बाद कर रहा है। ईराक की तबाही का मंजर मुस्लिमों के छुपा नही है। ये सब तथ्य भाजपा के लिए सबसे बढ़िया जनाधार के हथियार हैं।

भ्रष्ट हत्यारे मु.अ. डामोर की पदोन्नति- प्रभुस अभियंता पर

भ्रष्ट अपराधियों का बोलबाला मेहनतकशों का मुंहकाला

डामोर इंदौर मु.अ. और प्र.अ. सलाहकार रहकर लुटेगा दोनों पदों से

भोपाल। म.प्र. की भाजपा सरकार कितनी ईमानदार, स्वच्छ छवि और कितना भ्रष्टाचार मिटाएगी इसका बढ़िया उदाहरण है। म.प्र. लो.स्वा. यांत्रिकीय विभाग में बैठे मु.अभियंता के पद पर इंदौर में बैठा इं. डामोर। जिसका सीधा 5 हत्याओं से संबंध रहा है। जिसके समयमाया पूर्व में प्रकाशित कर चुका है। एसडीओ बनने से लेकर अभी तक मुख्य अभियंता पद पर रहने तक इसने लगभग रुपए 1 अरब से ज्यादा की कमाई की है। इसलिए लोकायुक्त के आरोप पत्र में उच्च न्यायालय में भी धन खर्च करके उस आरोप पत्र को उच्च न्यायालय के कागजों और कानून के जंगल में उलझा कर मुख्यमंत्री शिवराज लो.स्वा. यांत्रिकीय मंत्री गौरीशंकर चतुर्भुज बिसेन, प्रधान सचिव और सचिव को भी मोटा धन देकर अनेकों आरोपों के बाद भी प्रमुख अभियंता की पदोन्नति प्राप्त करने में सफल रहा।

यह न केवल बड़ा जालसाज आपराधिक प्रवृत्ति का होने के साथ बड़ा ब्लैकमेलर भी माना जाता है। सूत्रों के अनुसार मंत्री गौरीशंकर बिसेन,

सुरा सुंदरी का भारी शौकीन मिजाज होने के कारण सुरा सुंदरी के सेवन की इसके पास डाक्यूमेंट्री है जिसके आधार पर इसने पूरी भाजपा सरकार को ब्लेकमैल किया और धन भी दिया, तब महीनों के इंतजार के बाद यह पदोन्नति पाकर प्रमुख अभियंता सलाहकार बना इसका वरिष्ठ प्रमुख अभियंता सक्सेना भी इसकी ब्लैकमेलिंग में फंसा होने के कारण जब इसने हत्याएं की तो प्र.अभियंता सक्सेना से झूठे शपथ दिलवाकर इसने आप को ड्यूटी पर होना सिद्ध किया। न्यायालयों में, फिर ऊपर से धन खर्च करके यह बाइज्जत बरी हुआ। सभी करोड़ों रुपए के भ्रष्टाचारों में यह स्वयं बचा रहा परंतु अनेकों इंजीनियरों की इस शूकर ने नौकरियां चटवा दी अरबों रुपए की खरीदी इसने अपने का. अभियंता रहते हुए की और वह माल अभी भी खरगोन, उज्जैन में पड़ा सड़ रहा है, पर उसमें करोड़ों रुपए का कमीशन डकार गया।

अभी जबकि ये प्रमुख अभियंता के पद पर बैठा है। साथ ही मुख्य अभियंता इंदौर को पद को भी मात्र रुपए 10 से 12 करोड़ की कमाई के लिए कब्जा जमाए बैठा है जबकि इतनी ही कमाई से प्रमुख अभियंता सलाहकार के पद पर बैठकर भी करेगा।

भाजपाई शासन में ऐसे जालसाजों, भ्रष्टों अपराधियों का तांडव देखिए कि ऐसे हरामखोर गिद्धों को दो-दो पद पर मात्र कमाई के लिए बैठाया गया है, जबकि स्वच्छ और ईमानदार छवि वाले सैकडों एसडीओ, कार्यपालन अभियंता और दसियों अधीक्षणयंत्री पदोन्नति के इंतजार में बैठे-बैठे हर महीने सेवा निवृत्ति की कगार पर पहुंच रहे हैं और ऐसे षड्यंत्रकारियों का विभाग के दो-दो उच्च पदों पर बोलबाला है।

इस डकैत मुखैरे श्वान को एक पत्र सूचना के अधिकार में मार्च में दूसरा मई में और तीसरा सितम्बर 09 में दिया गया, परंतु तीनों पत्रों में दस्तावेज देने की अपेक्षा स्वाभाविक सब इसके इतिहास और वर्तमान में कुकर्मों अपराधी के ही दस्तावेज थे जानकारी देने से इस नीच आपराधिक मानसिकता के मुख्य अभियंता और प्रमुख अभियंता देने से उल्टी-सीधी गैर कानूनी दलीलें देकर मना कर दिया, यह सच है कि यह जानता है कि सूचना आयोग में बैठे टुकड़खोर भ्रष्टाचार की गंदगी चाटने वाले शूकरों तक अगर द्वितीय और अंतिम अपील लगा भी दी गई तो दो-तीन वर्ष बाद ही सुनवाई होगी और तो भी गंदगी चाटकर फूं-फां, सू-सां करके अपीलेंनिरस्त कर देंगे। इसके विपरीत समयमाया में इसकी लोकायुक्त की और रुपए 5 करोड़ की एक्साइज ड्यूटी की रिपोर्टस छाप दी गई भले ही इसने आवेदन निरस्त कर दिए हों।

डाट के श्वान...

पेज 4 से जारी

जैसा ये निजी कंपनियां निर्देशित करती है ये हरामखोर राष्ट्रद्रोही राष्ट्र की जनता और उसके उपभोक्ताओं को जानबूझकर तकनीकी खराबियां कम तरंगदैर्ध्य पर छोड़ कर उपभोक्ताओं को भगाने या दूसरी कंपनियों से जुड़ने के लिए मजबूर करते हैं।

बी.एस.एन.एल. चूंकि सरकारी कंपनी है, यहां इन बत्तमीजियों की जवाबदेही यदि उपभोक्ता शिकायत कर दें या सूचना के अधिकार में जानकारी मांग लें तो तय करते रहे। जिंदगीयां गुजर जाती है। इन भ्रष्ट नीचों की इस मानसिकता का पता इसी बात से चलता है कि यहां पर भी कर्मचारियों की नियुक्तियां तो की नहीं जा रही है, वरन् सारा काम इस निगम का भी ठेकों पर देकर ही करवाया जा रहा है। और वे ठेके भी इन्हीं डॉट के अधिकारियों के रिश्तेदारों के पास ही होते हैं।

डॉट के अधिकारियों की इस गिद्ध नोंच भ्रष्ट और निकम्मी मानसिकता का अंदाज इस बात से भी लगाया जा सकता है कि म.प्र. और छत्तीसगढ़ जैसे दो राज्यों का काल सेंटर भी पूना में बनाया गया है, जहां 94000-24365 पर फोन लगाने या सम्पर्क करने में ही घंटों लग जाते हैं। शिकायतें बड़ी मुश्किल से सुनी जाती है और सुनने के बाद वो शूकरों की ठेकेदारी फर्म रद्दी की टोकरी में डाल देती है। अब जनता और निगम के उपभोक्ता ये सोच सकते हैं कि आखिर डॉट के अधिकारी क्यों?

निगम की आय को बर्बाद करना चाहते हैं और उपभोक्ताओं को परेशान करके भगाना चाहते हैं। इसका सीधा सा कारण यह है कि निगम की आय से डॉट के मुखैरे गंदगी चाटने वाले इन सफेद पोश डकैतों को तो सीधे तो कुछ नहीं मिलेगा इसके विपरीत निगम के ग्राहक और उपभोक्ता टूटकर अगर निजी सेल और फोन कंपनियों को पाले में जाएंगे तो उनकी लूट का हिस्सा इनको मासिक वेतन जो विशुद्ध रिश्वत की गंदगी चाटने को तो मिल ही रही है। वास्तविकता में निगम को डुबोने की डाट की इस नीचतापूर्ण हरकत से सभी कर्मचारी संगठन भारी डरे व सहमे हुए हैं।

उनके सदस्यों की संख्या दिनों दिन घटने के साथ ही बाजार में प्रतियोगी सेवा प्रदाता के मुकाबले निगम न केवल भारी पिछड़ रहा है वरन शनैः-शनैः डॉट के अधिकारियों की बत्तमीजीयों के चलते 2008-09 से निगम के उपभोक्ता तेजी से घट रहे हैं।

सी.एम.ओ. कार्यालय देवास में भ्रष्टाचार की झलक

रुपए १० लाख के बिस्कुट भ्रष्टाचार में हजम

कदम-कदम पर भ्रष्टाचार का तांडव रुपए 3 से 5 करोड़ हर वर्ष डकारे

देवास। म.प्र. स्वास्थ्य विभाग में मंत्रालय और संचालक कार्यालय से लेकर नीचे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों जो दूर दराज के गांवों में भी स्थित होते हैं हर कदम लूट भ्रष्टाचार का तांडव मचा रहता है, वर्तमान आयुक्त स्वास्थ्य जो अभी प्रभार में है एस.आर. मोहंती से लेकर महाभ्रष्ट डॉ. अशोक शर्मा जो खरीदी में ही अरबों रुपए की डकैती डालकर कुछ टुकड़ा मंत्री अनूप मिश्रा और मुख्यमंत्री को देकर लोकायुक्त और आयकर के छापे के बाद भी मैदान में डटा हुआ है। आयकर और लोकायुक्त भी है तो सत्ताधीशों के इशारे पर नाचने वाले मोहरे ही हैं न भले ही आयकर केंद्र सरकार का हो, जब भ्रष्टाचार ऊपर ही चारों तरफ छाया हुआ हो तो नीचे वालों से कैसे ईमानदारी की उम्मीद की जा सकती है, फिर जहां तक डॉक्टरों का सवाल हो तो भी सरकारी तो फिर भी अंदाज लगाया जा सकता है।

सूचना क़े अधिकार में प्राप्त की गई जानकारी जो देवास जिले की मात्र मुख्य स्वास्थ्य व चिकित्सा अधिकारी की है वैसे 10 से 12 विभाग और भी होते हैं जिनकी क़ेश बुक, आवंटन इन सबसे अलग होता है, जिसमें आर सी.एच. मलेरिया, टीबी नर्सिंग प्रशिक्षण, कुष्ठ रोग, आईडीएसपी एड्स वेक्सीनेशन, जैसे और भी कई महत्वपूर्ण विभाग हैं जहां केवल कागजों पर ही कार्य होता है और 50 से 80% आवंटित धनका सीधा हजम कर लिया जाता है। इन सबका प्रभारी भी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ही होता है।

यहां हम पाठकों की सुविधा के लिए जो दस्तावेज हमें प्राप्त हुए उसमें 07-08 का आवंटन और खर्च और 08-09 का आवंटन और खर्च का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

वेतनभत्तों पर टिप्पणी अर्थहीन है मजदूरी के नाम पर 07-08 रुपए 815,0001 में से खर्च रुपए 539844 रुपए हुआ इसका 25% अर्थात रुपए 134 हजार और 08-09 में लगभग रुपए 44.415 में से रुपए 10 हजार डकार लिया गाय। यात्रा भत्ता रुपए 7,10 हजार में रुपए 7,08686/- में से करीब में से 30% रुपए 2 लाख के फर्जी भुगतान हुए और 08-09 में रुपए 10,39 हजार में से रुपए 3 लाख के फर्जी भुगतान हुए 22.001 के टीओ 22-009 ओईमे 07-08 में खर्च रुपए 30.26 हजार में रुपए 15 लाख के फर्जी भुगतान हुए। 08-09 में रुपए 43.88 हजार में से रुपए 20 लाख में फर्जी भुगतान किए गए, 34-002 में औषधि में रुपए 1 करोड़ 54 लाख में से 40% अर्थात रुपए 60 लाख और 08-09 में रुपए 45 लाख में रुपए 20 लाख सीधे डकारे गए। ग्रामीण और गरीबों को इन हरामखोर डॉक्टरों ने दोनों तरफ से लूटा, एक तरफ प्रशासन का आवंटित धन तो दूसरी मेडिकल स्टोरों से दवाई लिखकर कमीशन बटोरा।

अस्पताल सामग्री में 07-08 में रुपए 36 लाख 26 हजार सामग्री प्रदाय के व्हाउचर लगाए गए रुपए 18 लाख सीधा और 08-09 में रुपए 27, 67 हजार रुपए 12 से 15 लाख सीधे डकारे गए। जिसकी पुष्टि प्रा.स्वा. के. से लेकर जिला अस्पताल में देखी जा सकती है। भोजन के नाम पर 07-08 में रुपए 10 लाख में से रुपए 9 लाख के बिस्कुट की खरीदी दिखाई गई बिस्कुट आए रुपए 2 लाख के बाकी रुपए 7 लाख सीधे हजम किए। डॉ. शरद पंडित व पश्चात वर्ती प्रभारी सी.एम.ओ. ने रुपए 2 लाख के बिस्कुट में इतने घटिया थे कि कुत्तों को परोसे गए, अर्थात वो माल भी रुपए 50 हजार का नहीं था। स्टायफुड रुपए 14 लाख 21 हजार में से 10 से 20% कमीशन 07-08 में और 08-09 में रुपए 9.51 हजार में से 5 से 10% 07-08 अन्य खर्चों रुपए 5 लाख में से 496 हजार में 80% हजम इसलिए 08-09 में कोई आवंटन नहीं। मशीनरी के खरीदी और रखरखाव के नाम रुपए 15 लाख आवंटित खर्च 1495 हजार 30% रुपए 450हजार हजम बढी की भत्तों के व्हाउचर लगाकर पुराना माल पुरानी कीमतों पर कमीशन के बदले खरीदा गया।

प्रचार के लाभ आवंटित में 07-08 में पूरा खर्च किया गया 90% रुपए 4.50 हजम बाकी के पोस्टर छपवाना, दीवाल पुतवाने में दिखाकर हजम 08-09 में कोई बजट नहीं।

प्रशिक्षण के नाम 07-08 में रुपए 1 लाख स्वीकृत 90% हजम 10000 में प्रशिक्षणर्थीयों थोड़ा बहुत नास्ता वगैरह दिया गया, सारे फर्जी व्हाउचर, नर्मदा घाटी पुनर्वास में रुपए 3 लाख 34हजार खर्च 90% पैसा हजम कागजों पर खर्च 08-09 में पूरा पैसा लौटाया गया। निर्माण कार्यों में रुपए 11.5 लाख में काम हुआ रुपए 6 लाख से भी कम का बाकी हजम।

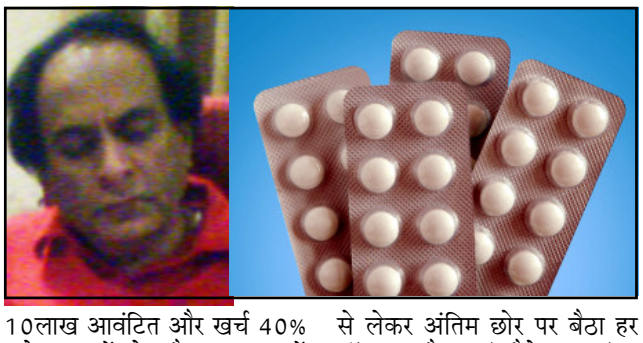

राज्य बीमारी 07-08 में 10लाख आवंटित और खर्च 40% झूठे वाउचरों से और 08-09 में रुपए 25 लाख में से रुपए 10 लाख डकारे गए। दीनदयाल योजना में रुपए 27 लाख में 07-08 में से रुपपए 21 लाख में से 35-40% - 08-09 में 10 लाख में से रुपए 3 लाख 51-000 रुपए 20 लाख में 8 लाख डकारे गए। यदि इनके व्हाउचरों की बारीकी से जांच की जाए तो घोटाले और भ्रष्टाचार में धन डकारने की राशि अनुमान से ज्यादा हो सकती है। लोकायुक्त आर्थिक अपराध अन्वेषण यदि तरीके से जांच करें तो सीएमओ से लेकर अंतिम छोर पर बैठा हर डॉक्टर और वहां बैठे कम्पाउंडर और बाबू तक लपेटे में आ सकते हैं। इस प्रकार कुल रुपए 882 लाख में से रुपए 3 करोड़ और 08-09 में रुपए 10 करोड़ में से लगभग 5करोड़ की राशि सी.एम.ओ. से लेकर प्रा.स्वा. केंद्र पर बैठे डॉक्टरों और अधिकारियों ने डकारी बेशक हर कर्मचारी यथायोग्य भेंटपूजा प्राप्त हुई, इसीलिए सूचना के अधिकार में हरामखोर पचासों चक्कर कटवाने के बाद 24 पन्ने की जानकारी दे पाए।

मु.अ.कां. को बंद करने...

शेष पृष्ठ-4 का....

उस पर खर्च का आंकलन, नियमों का पालन आदि का नियंत्रण खत्म होते ही जो कि मुख्य अभियंता अभी संभाल रहे हैं और नियंत्रित करने के साथ वास्तविकता में ये मुख्य अभियंता विभागीय कार्यों को उनकी आवश्यकताओं के साथ ही कर्मचारियों, अधिकारियों सुपर वाइजर से लगाकर अधीक्षणयंत्रियों की स्थापना, विभागीय कार्यों को क्षेत्रीय स्तर पर परेशानियों के समाधान के साथ ही संभागीय स्तर पर बैठे आयुक्तों के साथ मिलकर क्षेत्रीय प्रशासकीय आवश्यकताओं क्षेत्र के विकास की जमीनी हकीकतों को ध्यान में रखकर विकास के लिए सड़कें, भवन, पुलों आदि के डिजाइन निर्माण आदि में भी सहायता करते हैं। समाप्त कर देना चाहता है।

लोक निर्माण विभाग की स्थापना में अगर ये संभागीय मुख्य अभियंता कार्यालय औचित्यहीन होते तो 50 वर्ष पूर्व ही इनकी स्थापना की जाती। पर इस लालची मुखैरे श्वान ने वैसे भी भारी यातायात वाली सड़कें लोकनिर्माण विभाग से छीन कर सबको आप्रेटएंड ट्रांसपर पद्धति के अंतर्गत सड़क विकास निगम में अधिग्रहित कर ठेकेदारों को सौंप दी। इस धूर्त, मक्कार ने सबके 3 से 4 गुना ज्यादा इस्टीमेंट बनवाकर सौंपी। उसमें हर किसी में 25 से 50%जो अरबों में होता है इस सुलेमान श्वान ने पहले ही हड़प लिया। जब 25 से 50% पहले ही हड़प लिया जाएगा तो ठेकेदार कैसी सड़क बनाएगा और कैसे रखरखाव करेगा। इसके उदाहरण पूरे म.प्र. में बीओटी में चल रही सड़कों पर वर्तमान में देके जा सकते हैं। इंदौर-खंडवा- बुरहानपुर बीओटी पर अशोका बिल्डकॉन के ठेकेदार शूकरों को बैठे 6वर्ष से ज्यादा हो गया है। उस हरामखोर ने इस 203 कि.मी. सड़क पर 5 स्थानों पर टोल लगा दिया, जबकि एग्रीमेंट 3 का ही था न केवल दोनों हाथों से बार वसूली करती है वरन हर तीन वर्ष में जो पूरी सड़क पुर्ननवीनीकरण होना था। 6 वर्ष में मात्र 60-70 किमी शहरी क्षेत्रों में पेंचवर्क करवाया गया। इस द्विमार्गी पर न तो हरामखोरों ने 6 वर्ष में एक भी पेड़ लगाया न ही हर टोल बूथ पर पानी रखा गया। मूत्रालय-शौचालय की व्यवस्था की न क्रेन और एम्बुलेंस रहती है, किसी भी टोलबूथ पर 3 वैध और 2 अवैध बूथों पर वसूली हर तीन वर्ष में 7% की अपेक्षा 45 से ज्यादा दरें बढ़ा दी जाती है। बेशक इस शूकर को मासिक धर्म की गंदगी का नोटों का सूटकेस चाटने को मिलता है। वही हाल प्रदेश सभी बीओटी का है। देवास, भोपाल सुपर कारिडोर में भी जबकि अभी वह पूरा बना भी नहीं है। इसके बावजूद मु.मं. चौहान ने उस पर ठेकेदार को वसूली के लिए खुला छोड़ दिया, इसमें भी इन मुखेरों ने जालसाजी कर बिना सड़क निर्माण हुए टोल वसूलना शुरू कर दिया।

OFFICE OF CHIEF MEDCAL AND HEALTH OFFICER DEWAS (M.P.)

SATMENT OF ALLOTMENT & EXPENDITURE FOR THE YEAR 2007-08 AND 2008-09

NAMRE OF SCHEME	ALLOTMENT 2007-08	EXPENDITURE 2007-08	ALLOTMENT 2008-09	EXPENDITURE 2008-09
TOTAL ALLOTMENT	93130051	88248015	96324200	99989220
11-000 PAY & ALLOWENCE	64753400	60617751	69273200	79102737
12-000 WAGES	815000	539844	515000	44415
21-001 T.A.	710000	708686	1055000	1039132
22-001 TO 22-009O.E	7174000	3026306	8408000	4388096
33-003 VEHICAL MATT.	14500	65524	420000	120175
34 -002 MEDICINE	10502662	10470174	4500000	4499562
34-009 MATERIAL	10502662	10470174	450000	4499562
34-004 DIET	0	0	1000000	899991
41-002 STIPUND 160000	1421026	1150000	951444	
51-000 OTHER CHARGES	500000	496238	0	0
63-000 MACHINARY	150000	1495299	292000	291429
35- 000 PUBLICITY	500000	499997	0	0
24 -00 TRAING	10000	99800	140000	0
64-001 NARMADA VAILLY	334000	333934	14000	0
64- 002 CONSTRUCTION WORK	1150000	1150000	0	
42- 007 RAJYA BIMARI	1000000	100000	250000	250000
2210-7892			0	
DINDAYAL YOJANA			0	
34-002	270000	2897499	2000000	1994181
51-000			2000000	1999063
22-008		300000	291600	

धार्मिक ट्रस्टों और मंदिरों की सम्पत्ति भी माफिया के चंगुल में

प्रशासन लेनदेन कर सो रहा, माफिया ले रहे मजे

अकेले तीर्थ नगरी उज्जैन में ही अरबों की सम्पत्ति मोदी के चंगुल में

उज्जैन। धार्मिक तीर्थ नगरी में सहस्त्रों की पुराने, ऐतिहासिक मंदिरों और उन मंदिरों की देखरेख और खर्चों को चलाने के लिए उनसे जुड़ी अनेकों सम्पत्तियां हैं। इन सब सम्पत्तियों में से अनेकों के दस्तावेज न तो नगर निगम उज्जैन के पास हैं न जिलाधीश के भू-अभिलेख कार्यालय में है।

इसके साथ ही जिन हरामखोर जालसाज डकैतों ने ऐसी सम्पत्ति पर डाका डाला है फिर वो क्या किसी कमजोर तो है नहीं जब करोड़ों अरबों रुपए का माल है तो 1 से 2% धन करने में तो क्या बाबू, क्या भू-अभिलेख अधीक्षक और क्या एडीएम, एसडीएम सब खाओ-पियो और हाथ पिछाड़ू पोंछकर चलो वाले मुखैरों की फौज है। स्वाभाविक था कि इन भू-माफियाओं ने स्वयं ही सारे न केवल अभिलेखों को गायब करवा दिया। वरन् उस सम्पत्ति पर न तो इन डकैत हर जालसाजों ने सम्पत्तिकर ही कभी पूरा भरा न ही उससे होने वाली आय कर और धीरे-धीरे इन सम्पत्तियों को अपना नाम चढ़वा कर ठिकाने लगाते रहे हैं। प्रशासन के अधिकारियों में भी चूंकि धन बंट जाता है, इसलिए ये लंबी तान कर निंद्रा के आगोश में खोये रहते हैं और भू-माफिया न केवल ऐसी सम्पत्तियों को बेच खाने के साथ ही ऐसी ऐतिहासिक धरोहरों जिन पर म.प्र. पुरातत्व व संग्रहालयों का या केंद्रीय पुरातत्व व संग्राहलयों का अधिपत्य होना चाहिए था भू-माफिया

बड़ी-बड़ी बहुमंजिला इमारतें खड़ी कर रहे हैं। इसके साथ ही ऐसे भू-माफिया न केवल ऐतिहासिक धरोहरों पर अपना अधिपत्य जमा कर वहां के रहवासियों पर अपनी सम्पत्ति होने का रौब ऐंठकर उन पर अनेकों न्यायालयीन प्रकरणों में भी वहां पर निवास करने वालों पर लादकर ऐसी सम्पत्तियों से हटाकर वारे-न्यारे करना चाहते हैं।

ऐसे ही एक प्रकरण उज्जैन की मोदी गली में स्थित इंद्रधम्नेश्वर महादेव जो उज्जैन की तीर्थ नगरी में स्थित 84 महादेव मंदिरों में से 15वें नम्बर का है। पर धूर्त जालसाज मोहनलाल मोदी जिसके नाम से पानदरीवा में पूरी गली ही मोदी गली के नाम से जानी जाती है। यह धूर्त मोदी खानदान जागीदार खानदान रहा है, जानकारों के अनुसार इस खानदान के पास उज्जैन और इसके चारों तरफ 300-400 एकड़ जमीन उज्जैन नगर में 50-60 मकान भी जो थे इस मोहनलाल मोदी ने अपने बेटे हेमंत मोदी और हेमंत मोदी ने ये सम्पत्ति सरकारी लोगों को लेनदेन कर अपने बेटों किरन और पंकज के नाम कर दी। मोदी गली स्थित 84/15-18 क्रम का इंद्रधुम्नेश्वर मंदिर व उसकी जमीन जिस पर ये शीघ्र ही बहुमंजिला भवन बनाने जा रहे हैं खुदाई कर के साफ कर दी है, वहां से तत्काल लिए गए छाया चित्रों में उस ऐतिहासिक महल की धरोहर की टूटफूट और पत्थर बताते हैं आजादी से पूर्व इन 84 महादेव मंदिरों की सारी भूमि और इसकी देखरेख हेमंत मोदी के पिता मोहनलाल मोदी के ही पास थी। आजादी मिलने और इन राजाओं के राज्यों के विलय के समय ही ये सारी सम्पत्तियां मोहनलाल ने दस्तावेजी और भू-अभिलेखों में परिवर्तन कर अपने और अपने खानदान के सदस्यतों के नाम कर और करवा ली थी। जब इसके बारे में भ्रष्टों, जालसाजों के चारागाह उज्जैन नगरनिगम में सूचना के अधिकार में पत्र दिया गया तो पहले तो वहां बैठे इस हेमंत मोदी, किरन मोदी, पंकज मोदी के ही खानदान के रिश्तेदारों ने पत्र को ही दबा दिया, फिर इन सबके पाले और टुकड़ों पर पल रहे शूकरों ने चारों तरफ से उलझाने की कोशिश की और मामले को उज्जैन नगर निगम के जोनों की तरफ ढकेल कर वहां से जानकारी प्राप्त करने के लिए कहा गया। हमारे प्रतिनिधि का दावा है कि जिस 84/15 इन्द्रधुम्नेश्वर के मंदिर की जमीन पर ये मोदी खानदान साफसफाई कर निर्माण करने जा रहा है। वह पूरा न केवल जालसाजी पूर्ण होने के साथ ही वह ट्रस्ट की भूमि होकर न केवल सरकारी है, वहां किया गया सारा कृत्य गैर कानूनी होकर जालसाजी पूर्ण है। इसके विपरीत उज्जैन नगरनिगम के मुखैरे श्वानों ने न केवल मोटा धन डकार कर नक्शा भी पास कर भवन निर्माण की अनुमति दे दी है। जिलाधीश उज्जैन को चाहिए कि न केवल उस पर होने जा रह निर्माण को रोका जाए, वरन प्रशासन वह जमीन अपने कब्जे में लेकर इन पर मोदी खानदान के लोगों पर जालसाजी का मुकदमा चला कर इनके कब्जे की ऐसी सारी सम्पत्तियों को राजसाज कर कब्जे में ले जो इन्होंने जालसाजीपूर्ण तरीके से नगर भर में अपने कब्जे में कर रखी है। जिलाधीश उज्जैन को चाहिए कि ऐसी सभी ऐतिहासिक महल की और मंदिरों की जमीनों पर से अवैध अतिक्रमण हटाकर मंदिरों में उनके मूल स्वरूप में लाया जाए।

नाच रही भूमाफियाओं...

पेज 3 से जारी

से ज्यादा कार्पोरेट हाउसिंग कंपनियों के भूमि संबंधी दस्तावेजों की भी बारीकी से जांच कर इन डकैतों ने कब्जा की जमीन की भी बारीकी से नाप करवाई जाए। इन सभी डकैतों 30% से लेकर 70% तक सरकारी नजूल की फ्री होल, चरनोई, नदी, तालाबों, बंजरभूमि, नालों गांवों की ग्रामीणों के आने जाने के रास्तों आदि की भूमियों पर कब्जा कर ही अवैध रूप से सभी कालोनियां खड़ी की है। इसलिए म.प्र. शासन में बैठा मुख्यमंत्री धूर्त शिवराज और उसके सहयोगी मंत्री, इंडियन एव्यूसिंग सर्विस अधिकारी इनके लिए सस्ती दरों, किराये पर फ्री होल्ड लैंड के पट्टे, सस्तीदरों पर बांट रहे हैं। साथ ही कृषि भूमि को बचाए रखने के लिए 60 वर्ष बाद अधिनियम बनाने जा रहे हैं। यह सब भी कारपोरेट हाउसिंग कं. के करोड़ों रुपए डकार कर उनके हितों के संरक्षण के लिए ही किया जा रहा है।

ताकि इनकी काटी, बनाई कालोनियों में खड़े भवनों, मकानों, फ्लेटों, फार्महाऊसों की दिनोंदिन कीमतें बढती हुई मिले अन्यथा दूसरे छोटे-छोटे भू-माफिया भी जनता से पैसे इकट्ठा कर बुकिंग के नाम पर ऐसेही रो हाउसिंग फ्लेट्स, फार्म हाऊस खड़े करेंगे, बनाकर बेचेंगे तो इन मोटे जालसाज कार्पोरेट कंपनियों का अरबों रुपए का क्या होगा?

सत्ता में बैठे मुखेरे श्वानों चाहे उसमें मोलू बना मु.मं. शिवराज हो या मंत्री अनूप मिश्रा, कैलाश विजयवर्गीय, नागोद बाबूगौर, राघवजी, जयंत मलैया, गोपाल भार्गव, जगदीश देवड़ा, जगन्नाथ सिंग, रामकृष्ण तुकोजीराव, करणसिंग नारायणसिंग, हरिशंकर, देवीसिंग से लेकर पक्ष, विपक्ष के सभी विधायकों से लेकर जिलों के जिलाधीशों, एडीएम, उपजिलाधीश से लेकर पटवारियों तक सबको धन बंटा और मिला है इसलिए अब सब कार्पोरेट कंपनी के इशारे पर नाचकर सारे नियमों, कानूनों को बदलने, नए अधिनियम, बनाने की वकालत कर रहे हैं। आज है सत्ता में कल नहीं रहेंगे तो राजसी ठाठबाट कैसे चलेंगे। प्रदेश पर्यावरण जनता आने वाली पीढियां जाए भाड़ में कल की मरती आज मरे ये सब सत्ताधीश अमर फल खाकर धरती पर आए हैं। इन शूकरों को शताब्दीयां गुजारनी है धरती पर।

जम्मू कश्मीर को ...

पेज 8 से जारी

भ्रष्ट कमीशनखोर कांग्रेसी श्वानों की फौज तत्काल नहीं जागी तो कश्मीर हाथ से गया ही समझो, फिर पाकिस्तान से चीन तक, अमेरिका रूस से लेकर, अफ्रीका के समुद्रा डकैतों, तस्करों का कब्जा होगा और वो वहां से बैठकर सारी गतिविधियां चलाएंगे।

अमेरिका पाकिस्तान को धन देकर आतंकी को पालकर जो तांडव करवा रहा है, उधर चीन को उकसा कर युद्ध की तरफ जाने की सारी तैयारियां करके बैठा है उसकी जल, थल और वायु सेना दिखाने के लिए मात्र तीन गुना दिख रही है पर वास्तविकता से 10 गुना ज्यादा है, जो आंकड़े/समंक समाचार पत्रों में छप रहे है, उसी के बताए हुए हैं ताकि हल्ला ज्यादा न मचे, जबकि वह साम्यवादी देश है, जहां कौन, कहां, क्या कर रहा है। पड़ोसी को भी नहीं मालूम होगा।

अमेरिकी धूर्त की विश्व बैंक बनिया है, जो पहले कर्ज जबरन पिला-पिलाकर वहां के अधिकारियों, कर्मचारियों से लेकर मंत्री तक कागज के टुकड़े रूपी डॉलर बांटकर भ्रष्ट, निकम्मा, नपुसंक बनाती है, विकास के नाम पर, बाद में वह कर्ज चुकाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण दिलवाकर अपनी शर्तें मनवाने के लिए वापस कररती है, शर्तों के बहाने फिर देश के संसाधनों से चलकर जनता को गुलाम बनाती है जैसा कि इस देश में विश्व बैंक के कर्ज से, आईएमएफ के कर्ज से हो रहा है इस तरह से हम अमेरिकी गुलाम है, दूसरा तरीका उस देश पर सीधे आक्रमण करके गुलाम बनाना, तीसरे तरीके से उस देश पर दूसरे देशों से आक्रमण करवाकर सहायता देने के बहाने अपनी सेना को बैठा देना, पहले तरीके से गुलाम बन चुके हैं। अब तीसरे तरीके से गुलाम बनाने के लिए चीन और पाकिस्तान से आक्रमण करवाकर अपनी सेना उतारने की तैयारी में बैठा है अमेरिका ये उसी की ही चाल है, कश्मीर का अंतर्राष्ट्रीय करण करवाना और उसको अलग-थलग करवाकर भारत पर युद्ध थोपना, अमेरिका ही आतंकियों को अभी भी पाकिस्तानी के माध्यम से धन देकर भारत के विरुद्ध ही षडयंत्र रच रहा है।

अंतरिक्ष शून्य है, शून्य में जाकर सब शक्ति भी शून्य

चांद पर पानी

शिगूफों की कहानी

जनता का ध्यान मीडिया को उलझाने की कोरी बकवास

अंतरिक्ष में सब शून्य है केवल प्रकाश की किरणें ही गमन करती हैं। हवाई जहाज हवा पर तैरता है, चॉपर गुरुत्वाकर्षण बल के विपरीत हवा को काटकर ऊपर उठकर तैरता है। जब अंतरिक्ष में न गुरुत्वाकर्षण बल है न हवा है, सब शून्य है तो सारी शक्ति भी शून्य हो जाएगी, सारे उपग्रह में जाकर छोड़ दिए जाते हैं।1969 में आर्म स्ट्रांग चंद्रमा पर उतरा था तब पानी क्यों नहीं मिला। तब सभी ठोस पथरीला, उबड़-खाबड़ ही तो था तो भारत के वैज्ञानिकों ने पानी ढूंढ निकाला। चांद पर धूर्तों ने प्लाटों की बुकिंग पहले ही शुरू कर दी है। हरामखोरों और जालसाज मूर्खों को ऐसे ही मूर्ख बनाकर लूटते हैं। बढ़ती महंगाई से जनता का ध्यान हटाने, स्वाइन फ्लू की दहशत फैलाकर अरबों रुपए की दवाई खरीदने-बेचने के खेल की पोल समयमाया ने अपने समाचार पत्र और साइटों से पहले ही खोल दी है। अमेरिकी वैज्ञानिकों का भारतीय वैज्ञानिकों की हां में हां करने का कारण ये भी हो सकता है कि वो पूरी दुनिया के मूर्खों के लंबे-चौड़े प्लाट में बेचकर करोड़ों डालर कमाए।

स्वाभाविक है कि किसी भी प्राणी के शरीर को चलाने के लिए पानी की तरह तरल पदार्थ की प्रथम आवश्यकता है, इसरो के वैज्ञानिक जनता के पैसे का कैसे भी दुरुपयोग, सदुपयोग करें रूस जैसे देश भी अंतरिक्ष में ले जाकर प्रयोगशाला जो स्कायलेब के नाम से जानी गई थी ले गए थे जो लंबे समय तक अंतरिक्ष में प्रयोग करती रही। उसने भी चांद पर जाने का शिगूफा नहीं छोड़ा। अंतरिक्ष जहां सब कुछ शून्य लाखों कि.मी. की किसी भी यान की यात्रा शून्य में किस बल के आधार पर होगी जबकि वहां शक्ति उत्पन्न करने के अन्य घटक ही नहीं है। जैसे धरती पर पेट्रोल को जलाने के लिए आक्सीजन की जरूरत है तो पेट्रोकार्बन्स के साथ मिलकर कार्बन होना, डाई आक्साइड बनाती है। जब जलाने और जलने के लिए कोई माध्यम ही नहीं होगा

सूर्य की प्रकाश किरणों से संग्रहित कर बिजली भी तब ही बनेगी जब उन घटको को सक्रिय करने के लिए माध्यम होगा, जैसे पृथ्वी पर सूर्य ऊर्जा संचालित सेलको भी तो जब ही सक्रिय होंगे जबकि वातावरण, वायु, गुरुत्वाकर्षण बल जैसे घटकों की सक्रियता है पर अंतरिक्ष में जब सब शून्य है तो पदार्थ की सक्रियता भी शून्य है।

जहां तक उपग्रहों का सवाल है तो वे केवल दर्पण की तरह परावर्तन का कार्य सम्पन्न करते हैं। रेडियो तरंगे कार्यशील रहती हैं, जिन्हें किसी माध्यम की बल की आवशय्कता नहीं होती। वैसे गालिब चंद्रमा का पानी दिल को बहलाने, जनता को महंगाई के दर्द से बाहर लाने, अनाप-शनाप धन दौलत वालों को ख्वाब दिखाने , जब चंद्रमा पर पानी है तो भविष्य में बस्तियां बसाने का सपना दिखाना का ख्याल अच्छा है। सत्ताधीश धूर्तों को तो हर सुबह ऐसे ही किसी शिगूफे का इंतजार रहता है, समस्याओं, आंसुओं, जनता की चीख-पुकारों को अनसुना कर अपने-अपने यारों के कार्यकर्ताओं के साथ जनता को उलझाने के लिए ऐसे बहाने भी मरहम का काम करते हैं।

यही कारण है कि राकेटो से उपग्रहों को अंतरिक्ष में पहुंचाय जाता है। अमेरिका के 1969 के चांद पर उतरने की घटना भी केवल अणेरिकी दादागिरी वैज्ञानिक पहुंच और दुनिया को अचंभित करने का शिगूफा मात्र था, उस समय भी वैज्ञानिकों ने जो गहरी जानकारी रखी थी केवल शिगूफा ही बताया था।

भारत के परिवारवाद...

पेज 8 से जारी

परंतु यौनाचार के लिए महिलाएं कैसी भी हो, पुरुषों के साथ स्थापित करने और अपना मनचाहा कार्य निकलवाने करने, भ्रष्टाचार करने पकड़े जाने पर संबंधित अधिकारी को तन, मन, धन से खुश करने में आगे रहकर पहल कर लेती हैं। हालात ये हैं कि शासकीय विभागों में कंडोम का डिब्बा, प्रवेशद्वार के आजू-बाजू में रखे जाने की व्यवस्था सरकारी खाते से ही हो रही है, जिसे 1990 में जबलपुर संभाग रेलवे कार्यालयों के अधिकांश द्वारों के नकट देखा गया था, अर्थात हमारे देश में अमेरिकी नीतियों का अनुसरण करके महिलाओं को बहाना कोई सा भी बाहर निकालने का उद्देश्य औरत को बाजारू बनाकर कुल सहस्त्रों लाखों वर्ष पुरानी औरत पर टिकी परिवाररद की व्यवस्था को खंड-खंड बिखैरकर संस्कृति का रोना रोने वाले सामाजशास्त्रियों, धर्माचार्यों के हिन्दू समाज के संयुक्त परिवारवाद की व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर आने वाली पीढियों के सामाजिक, आर्थिक के बाद सबसे महत्वपूर्ण मानसिक द्वंद्ध, पैदाकर कमजोर करना है, कैसा लगता है जब किसी बेटे-बेटी के सामने खुले में बोल जाता है इसकी मां उसकी रखैल थी, धंधेवाली, अय्याश, वैश्या, कालगर्ल थी। उस संतान के जो पुत्र-पुत्री होंगे यह सुनते ही एक सेकंड में सारी इज्जत का जनाजा निकल जाताहै। जो पीढ़ी दर पीढ़ियों तक ये अभिपाप भोगते हैं।

बेशक अब 16की लड़की भी इंदौर से धंधा करने उड़ान भरकर रायपुर पहुंच कर धंधा करती हा और शाम होते-होते स्कूल ड्रेस में घर पहुंच जाती है। शादी का विज्ञापन देती है और मोटे-मोटे मुर्गो को फांस सुबह किसी को निपटाती है, दोपहर में किसी को और शाम के साथ नास्ता किसी के साथ, डीनर किसी के साथ, रात किसी के साथ गुजारती है। हमारे देश में इस धंधे का प्रचार-प्रसार टीवी के सीरियलों ने खूब किया है। देश की महिलाओं की आधी आबादी इन सीरियलों का अनुसरण करते हुए 2-4-5 मुर्गे पाल कर धन कमाने में विश्वास करने लगी है।

इन सबके विपरीत शासकीय कार्यालयों, चुने हुए जन प्रतिनिधियों में बढ़ती 50% आरक्षण औरतों को बाजारू बनाने के साथ ही राष्ट्र की वास्तविक प्रगति यौनाचार में उलझ कर रह जाएगी रह जाती है। अब जयाप्रदा खूबसूरत है इसलिए अमरसिंग उसे पार्टी में लाकर सांसद बना लेता है और सारे सुख भोगता है, बहिन मायावती कांशीराम की बन कर मुख्यमंत्री बन जाती है। राज्य की प्रगति गई भाड़ में खुले में जनता के धन से अपनी प्रतिमाएं लगवातीं है।

पूरे देश में नकली मावा, घी, पकड़ जाता रहा

मालवा में खाद्यनि. सी.एम.ओ. नियंत्रक बटोरते रहे धन

इंदौर, उज्जैन, संभागों में बेचारे दीवाली मनाते रहे

म.प्र. के ग्वालियर, भोपाल, चंबल संभाग के साथ उ.प्र. के आरहे नकली मावे की धर पकड़ न केवल ग्वालियर, भोपाल संभाग के अधिकांश जिलों में वहीं पकड़ गया, जहां जिलाधीश और मु.चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों ने पहल की, इंदौर-उज्जैन संभागों के अधिकांश जिलों जिसमें इंदौर-उज्जैन जिले भी थे यहां बैठे हरामखोर मुखैरे शूकरों जिसमें सी.एम.ओ. के साथ खाद्य एवं औषधि अपमिश्रण विभाग भ्रष्ट निकम्मे डकैतों की फौज जो सितम्बर-अक्टूबर में मात्र खानापूर्ति के लिए नमूने एकत्रित करके भेजती रहे कोई बड़ी कार्यवाही सैकड़ों मिठाई, नमकीन, दूध, मावे, घी व अन्य खाद्य पदार्थ सामग्री विक्रेताओं पर इंदौर, देवास, उज्जैन में जानबूझकर नहीं की गई जबकि देवास के शुभम फूड्स जैसे अनेकों नकली घी, दूध, मसाले व अन्य खाद्य सामग्री की पैकिंग करने वालों के अनेकों उद्योग देवास में ही हैं।

वहां के विधायक, मंत्री, तुकोजीराव, सी.एम. ओ. वास्केले, एडीएम को हर महीने बांटकर नियमों के विरुद्ध वहां चार अन्य खाद्य निरीक्षकों को तहसीलों का कार्य क्षेत्र इसीलिए दिलवाया गया है ताकि ये सभी बडे उद्योगों और मिलावटी व नकली माल के पेक करने, बेचने वालों से स्वयं वसूली कर सके। मार्च 09 में सेवा निवृत्त ये डॉ.जटिया उसके बाद प्रभारी बना डॉ. भंडारी और अब डॉ. वास्केले जैसे मगरमच्छों, जिन्हें केवल वसूली और डकैती से काम होता है, यहां तक कि समयमाया ने उस परिपत्र की प्रति को भी समाचार पत्र में छापा कि यह अवैधानिक है कि खाद्य निरीक्षकों को क्षेत्रवार कार्य वितरण किया जाए इन भ्रष्टों को तो हर महीने वसूली मिलती है। ये हरामखोर मोटी चमड़ी के शूकरों को क्या फर्क पड़ता है, क्या गैर कानूनी है और क्या कानूनी है।

खा.नि. सुषमा पथरोल की जालसाजियों की पहले भी अनेकों जानकारियां समयमाया प्रकाशित कर चुका है पर इस धूर्त भ्रष्ट लुटो और लुटाओं के दम पर शान से अपनी कारगुजारियां करती हुई वसूली में जुटी है। दूसरा खाद्य एवं औषधि नियंत्रक के रूप में बैठा इँडियन एव्यूसिंग सर्विस के राकेश श्रीवास्तव ने वह पद रुपए 50/- लाख खर्च करके हथियाया ही इसलिए कि वो भी औषधियों और खाद्य निरीक्षकों के लाखों रुपए वसूली करे और मिलावटीयों पर गाहे बगाहे कार्यवाही होने पर उनको बचाने में करोड़ों रुपए की कमाई कर सके और वो कमाई कर ही रहा है। विभागीय विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार ये राज्य सेवा से भारतीय प्रशासनिक सेवा में आया महाभ्रष्ट लुटेरा और मुखैरा श्वान इसके पूर्व की खाद्य एवं औषधि नियंत्रक रह चुकी सलीना सिंग के पदचिन्हों पर चल रहा है। वैसे ये इंडियन एव्यूसिंग सर्विस अधिकारियों को न कानून से मतलब होता है न जनहित से इन गिद्धों को केवल नोंचने और वसूली से मतलब होता है। इसा सीथा

सा उदाहरण है उज्जैन संभाग के पथरोल दम्पत्ति उज्जैन जिले में पदस्थ अरविन्द पथरोल की भी लूटखसोट और नए आए खाद्य निरीक्षकों को इस जालसाज मुखैरे श्वान की मिलावटियों, नकली दूघ, घी, मावा, तेल, मसाले, खाद्य पदार्थ बेचने वालों से मासिक वसूली की कोई कहानी न मालूम हो सके इसलिए उसने भी सी.एम.ओ. उज्जैन एडीएम और एसडीएम को मोटी गड्डियां भेंट कर गैर कानूनी तरीके से दूसरे खाद् निरीक्षकों को खाचरौद, तराना, महिदपुर, घटिया, नागदा, बड़नगर तहसीलों में क्षेत्रवार, पदस्थापना करवा दी और वो दोनों हाथों से पूरे उज्जैन से वसूली कर रहा है।

इंदौर में बेशक किसी भी खाद्य निरीक्षक को भले ही क्षेत्रवार आवंटन न भी हुआ हो, परंतु यहां बैठा खाद्य निरीक्षक सचिन लोंगरिया भी सारे मिलावटियों, नकली मसाले, घी, मावा, मक्खन, पनीर, मिठाई वालों, नमकीन वालों सभी बड़ी होटलों, रेस्टेरेंट से नए खाद्य निरीक्षकों को अलग-अलगी टीम बनाक भेज या भिजवा देता है और स्वयं सीधी वसूली में लगा रहता है। औपचारिक खानापूर्ति के नमूने लिए अवश्य जाते हैं पर ये शातिर उन्हें बचाने, नमूने पास करवाने में सिद्धहस्त हैं न ये 8 खाद्य निरीक्षकों में से कुछ से इसने पत्रकारों सी.एम.ओ. के नियंत्रक के नाम से वसूली की और उनका भी धन डकारा।

यही कारण था कि इंदौर-उज्जैन, देवास में निगम के पार्षदों या स्वास्थ्य प्रभारी पार्षद ने निगम के खाद्य निरीक्षकों के साथ कार्यवाही कर मावा, घी, आदि पकड़ा। परंतु इन तीनों जिलों में म.प्र. खाद्य एवं औषधि विभाग के खाद्य निरीक्षकों ने दोनों हाथों से धन बटोर कर जनता को खुले में नकली खाद्य पदार्थ खाने के लिए छोड़ दिया, यहां बड़े व्यापारियों, मिठाई, नमकीन, तेल, मसाले, किराना बेचने वालों के विरुद्ध इन डकैतों ने कोई कार्यवाही नहीं की, करते भी कैसे दीवाली पर दीवाली मनाने के लिए बेचारे धन बटोरने में लगे थे। फुर्सत नहीं थी, इतने सारे दुकानदारों, उद्योगों, रेस्टारेंट, होटल संचालकों को दीवाली की बधाई और अपनी कागजों की मिठाई बटोरने से।

राष्ट्र की जड़ों को खोखला करने का अंतरराष्ट्रीय दुष्चक्र

भारत के परिवारवाद को नष्ट करने का अमेरिकी षड्यंत्र

महिलाओं को घर से निकालकर बाजारू बना रहा महिला आरक्षण

पूरे विश्व में भारत के परिवारवाद की अच्छाइयों, उसी के कारण यहां की युवा पीढ़ी पूरे विश्व में सफल और पेशेवर व्यवसायी बन कर उभरी है। दूसरे इस राष्ट्र का परिवारवाद ही था जिसने राष्ट्र को अंग्रेजों को चंगुल से मुक्त करवा दिया था, हमारे राष्ट्र के परिवारवाद को देख पूरी दुनिया में एकल परिवारवाद की व्यवस्था को वर्तमान में नकारा जाने लगा और वहां भी पुनः संयुक्त परिवारवाद की व्यवस्था पैर पसारने लगी। इसके विपरीत भारत में रहकर अंग्रेजों ने अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले उसमें उन म्लेच्छों ने यह पाया कि यदि किसी राष्ट्र, उसकी समाज के आधार पर चलते हैं और समाज संयुक्त परिवारों के दम पर बहुत आसानी से पीढ़ी दर पीढ़ी चलते जाते हैं यदि परिवार की आधारभूत कड़ी महिलाओं को घर से बाहर निकालकर किसी भी बहाने चाहे नारी मुक्ति आंदोलन, पैर पर खड़ा करने, स्वावलंबी बनाने, पंचायतों, निगमों, पालिकाओं, विधान व लोकसभाओं में बराबरी का दर्जा दिलाने, नौकरी करवाने के नाम पर निकाल कर बाजार बना दिया जाए तो आसानी से न केवल परिवार छिन्न-भिन्न हो जाएंगे, वरन दूसरे पुरुषों के

साथ रहने से उसके मानसिक और शारीरिक संबंध बनने से एकल परिवार टूटेंगे। आने वाली पीढी की अपने आप बर्बादी की कहानी लिखी जा सकेगी, साथ ही पंचायतों, निगमों पालिकाओं, विधान मंडलों, लोकसभा आदि में औरतों के प्रवेश से राष्ट्र के कामों से ध्यान हटाकर अनैतिकता में उलझ जाएंगे। आसानी से किसी भी महिला पुरुष को नैतिकता के नाम पर बदनाम कर उस महिला पुरुष को यौन संबंधों के आधार पर बदनाम कर उस सदस्य का पार्टी का मुंह भी काला कर चुप किया जा सकता है।

हमारे देश में पूरी सरकारी नीतियां सामाजिक संचालन अमेरिकी षड्यंत्रों को अंजाम देने वाली संस्था और उसकी अन्य सहायक संस्थाएं संयुक्त राष्ट्र संघ के पदचिन्हों पर या उनके निर्देशानुसार निर्धारित की जातीह ै। जिनका मूल उद्देश्य दूसरे राष्ट्रों की व्यवस्थाओं को बिगाड़ कर अपने पैर जमाना, अपना व्यवसाय करना अपनी दादा गिरी, गुंडागिरी को जायजठहराते हुए अपना सम्राज्य स्थापित करना है। भारत में लोकसभा से लेकर राष्ट्र की सभी विधानसभाओं, निगमों, पालिकाओं, पंचायतोंसे लेकर सभी शासकीयविभागों यहां तक से तीनों सेनाओं में महिला आरक्षण अमेरिकी षड्यंत्रों की चालों का ही परिणाम है। किसी भी बहाने महिलाओं को घर से बाहर निकाल बाजारू बनाकर इस भारत के सामाजिक ताने बाने का आधार पर परिवारवाद की व्यवस्था को नष्ट करना है।

वर्तमान हालात ये हैं कि इन महिलाओं के बाहर निकने, उनके दूसरे पुरुषों से मानसिक और शारीरिक रुप से संबंध स्थापित होने का ही कारण है कि पूरे देश में परिवारों के विखंडन का तूफान तालाकों के रूप में छोटी-छोटी जिला अदालतों से लेकर सर्वोच्च न्यायालय में छाया हुआ है सभी निजी और सरकारी संस्थानों में उच्चाधिकारियों से जो कि मंत्रालयों, सचिवालयों, मुख्यालयों से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक महिलाओं से यौनाचार को लेकर अन्य सभी कर्मचारियों, अधिकारियों, मालिकों आदि में ये महिलाएं न केवल विवाद का कारण बन रही हैं वरन सरकारी विभाग तो खुले यौनाचार और रोमांस के अड्डों में बदलते जा रहे हैं। अब कौन लंच में किसके साथ बैठकर गप्पे लगाएंगी चाय पियेंगी, किसको लाईन देगी, किसको लाइन मारेगी कि चचाएं चपरासियों से लेकर प्रधान सचिवों, सचिवों के कार्यालय तक का हिस्सा बन चुकी है। रात की सभा से लेकर राष्ट्र के 27 राज्यों और 8 संघ शासित प्रदेशों की विधानसभाओं से लेकर जिलों, संभागों, तहसीलों की नगरनिगमों, पालिकाओं से लेकर ग्राम पंचायतों तक महिलाओं की भागीदारी से महिलाओंके प्रति जागरुकता भले ही उनका उत्थान 10 से 20% हुआ हो, परंतु यौनाचार अवश्य 95% तक चारों तरफ बढ़ने से यौनाचार विवाद का मुद्दा अवश्य बनता जा रहा है। अब सरकारी कार्य हो न हो **शेष पृष्ठ 7 पर**

पाकिस्तान, मुस्लिम राष्ट्र और चीन मिलकर कर रहे षड्यंत्र

जम्मू-कश्मीर को अलग करने की साजिश

सत्ताधीशों को मौज-मस्ती, कमीशन खोरी से फुर्सत नहीं

पूरे राष्ट्र की अर्थव्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों पर वैसे तो सारी दुनिया के धूर्तो जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, इटली और पूरे यूरोप के साथ अब मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान के सहयोग में खड़े हो ही गए हैं, उसमें चीन भी कूदकर अपना वास्तविक रंग दिखा रहा है। जिसके पीछे हमारे धूर्त, मक्कार, गिद्ध, मनमोहन सोनिया के साथ पूरी कांग्रेस और कम्युनिस्ट मिलकर पूरे देश को नर्क बनाने पर तुले हैं। इसे वो अपनी अय्याश और मौजमस्ती लूट खसोट की मानसिकता के चलते निहायत मक्कारीपूर्ण तरीके से धन बटोर कर स्विस बैंकों में भेजकर हर तरह से पूर्णरूप से बर्बाद करके ही दम लेंगे ये गिद्धों की फौज अपनी जेबें भरने के लिए जहां सामने के रास्ते से बहुराष्ट्रीय कंपनियों को देश की अर्थव्यवस्था को कमीशन डकार कर सौंप रहे हैं वो हमारे देश का पानी हमारे देश की बोतल में भरकर भी हमारे संसाधनों पर कब्जे जमा रहे हैं, देश की जनता को उसके आने वाली पीढ़ियों को नपुसंक नकारा और गुलाम बनाने के लिए जहर पिला रहे हैं।

उनके उस जहर को हमारे निकम्मे मंत्री,प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, उनसे कमीशन डकार कर जहर पिलाते रहने के लिए भी कानून बना रहे हैं। अमेरिकी, ब्रिटिश, चीनी कंपनियों के देश में बुलाकर उन्हें बड़े-बड़े प्रोजेक्ट सौंपे जा रहे हैं।

चीन ने कोरबा में बाल्को की चिमनी कांड में अपनी असली औकात दिखा दी, पर इन धूर्त शूकरों की उनकी सच्चाई समझ में नहीं आई वो चिमनी अगर बनते समय नहीं गिरती तो बन जाने के बाद साल, छह महीने में गिर कर अभी 100-150 मजदूर दब कर मरे थे बाद में 200-500 लोग मरते।चीन हर कदम पिछल 60वर्षों से ही अपनी हड़पों, दबाओ की मानसिकता का रंग दिखाता रहा। हमारा मूर्ख अय्याश नेहरू उन्हें अपने घर में बुलाकर असलियत बताता रहा, उन्होंने आक्रमण किया और 1 लाख वर्ग किमी जमीन हड़प ली, फिर हमारे सत्ताधीशों को कमीशन, मौजमस्ती के अवसर मिले और श्वानों की भांति नेहरू की गलतियों को अनदेखा कर घर में घुसाने लगे वो इनकी अय्याशी और मौजमस्ती, कमीशन खोरी, ढीलेपन को अच्छी तरह से समझ कर कब्जा जमाने लगा वो कभी किसी का सगा नहीं रहा, अभी वो पाकिस्तान को मात्र भारत को चमकाने, धमकाने अपने पैर जमाने के लिए काश्मीर मुद्दे पर हां में हां मिला रहा है, इसके हां में हां मिलाते ही इस्लामिक देशों ने अपना विशेष अधिकारी वहां नियुक्त कर जम्मू-कश्मीर को स्वाधीन राष्ट्र बनाने की जो पहल की है अब इन हरामखोर कांग्रेसियों को समझ लेना चाहिए कि उकी कश्मीर में आतंकवाद को बढ़ावा देकर उनकी आड़ में जो जनता का धन डकारा गया था उसकी कितनी बड़ी कीमत पूरे देश और देश की जनता को चुकानी पड़ेगी।

जिन हरामखोरों को देश की जनता चुनकर भेजती है, वो अपनी मोटी रिश्वतों, कमीशन के लिए देश को कैसे सारे चौराहे नीलाम करने पर तुले हैं काश्मीर की राजनीति में कांग्रेसी राक्षसों का तांडव न केवल देश वरन दुनिया के सामने है, यह देश मानव सभ्यता के उदयसे लेकर मानव सभ्यता के पूर्ण अस्तित्व समाप्त होने और धरती को रेगिस्तान बनाने तक अन्य सभी देशों की आंखों में खटकता रहा है और खटकेगा। हर आतंकवादी से लेकर साम्राज्यवादी चाहे वे जेहादी, लश्कर, तालिबान हो से लेकर अमेरिकी राष्ट्रपतियों की नजर में खटकता चटकता रहता है। यह बात हमारे पूर्वजों से लेकर वर्तमान के धूर्त गिद्धों को मालूम है, जो सत्ता में बैठकर देश की जनता के हितों के साथ उसी जनता के धन से वसूली कर खिलवाड़ करते रहते हैं।

यदि भारत के अय्याश, मक्कार धूर्त, **शेष पृष्ठ 7 पर**

प्रतिबंधात्मक सूचना

इस समाचार पत्र एवं वेबसाइट में प्रकाशित समाचार सामग्री का पूर्ण-अपूर्ण या उसके आधार पर बनाये गये अन्य समाचार, टीवी समाचारों, टीवी एपिसोड, इंटरनेट साइटों पर नगर, प्रदेश व राष्ट्र या राष्ट्र के बाहर विश्व में किसी समाचार पत्र पत्रिका, टीवी समाचारों, डाक्यूमेंट्री या धारावाहिकों में बिना लिखित आदेश व अनुमति के उपयोग न करें. अन्यथा कॉपी राइट एक्ट के अंतर्गत इन्दौर न्यायालय में क्षतिपूर्ति एवं कानूनी कार्यवाही की जा सकती है एवं किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र इंदौर रहेगा। इस समाचार पत्र की प्रतियां लेकर कुछ जालसाज ढोंगी पत्रकार होने का ढोंग कर पैसे, चंदा, सम्मेलनों के नाम पर धन वसूली करने की शिकायतें मिल रही हैं. ऐसी किसी भी अवस्था में आप सीधे मोबाइल पर चर्चा कर स्थिति स्पष्ट कर सकते हैं. अन्यथा सीधी पुलिस और कानूनी कार्यवाही करने के लिये स्वतंत्र हैं.

आज्ञा से

प्रधान संपादक

स्वामित्वाधिकारी, प्रधान संपादक एवं प्रकाशक अजमेरा एस.पी. कुमार के लिए मीडिया वर्ल्ड कम्यु. 299-अंबेडकर नगर, इन्दौर के लिए नवनीत प्रिंटर्स जेल रोड, इन्दौर द्वारा मुद्रित.

कम्प्यूटराईजेशन- सुनील जोशी 93290-40982, भोपाल प्रतिनिधि एस.के. भारद्वाज मो.94256-37958, इन्दौर कार्या. फोन 2530859 मो. 93007-55803